

खबर संक्षेप

दो व्यक्तियों के शव मिलने से फैली सनसनी खरखौदा। शनिवार को अलग-अलग स्थानों पर दो व्यक्तियों के शव मिलने से सनसनी। पहली घटना में रिलायंस पेट्रोल पंप के पास फ्लाईओवर पर करीब 40 वर्षीय व्यक्ति का शव मिला। मृतक की पहचान हरेन्द्र पुत्र सुरेश निवासी माथना, जिला रोहतक के रूप में हुई है। दूसरी घटना में गांव गढ़ी सिसाना मोड़ के पास सोनीपत-रोहतक रोड किनारे झाड़ियों में करीब 30-32 वर्षीय व्यक्ति का शव मिला। मृतक की पहचान जयदीप पुत्र निरंजन निवासी गांव गढ़ी सिसाना के रूप में हुई है।

परशुराम चौक में रक्तदान शिविर 24 अगस्त को गोहाना। ब्रह्मकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय की शहर में पंजाबी कालोनी शाखा द्वारा 24 अगस्त को रक्तदान शिविर आयोजित किया जाएगा। भागराम ट्रस्ट के सहयोग से यह शिविर राजयोगिनी दादी प्रकाश मणि (पूर्व मुख्य प्रशासिका माउंट आबू) की 19वीं पुण्यतिथि पर शहर में सोनीपत मार्ग टी-प्लाईट पर भगवान परशुराम चौक में आयोजित होगा।

रिश्वत मामले में चाय वाले के परिजनों ने उठाए सवाल खरखौदा। आठ हजार की रिश्त के मामले में एसीबी द्वारा गिरफ्तार किए गए चाय की दुकान के संचालक राकेश के परिवार ने अब पूरे मामले में गंभीर सवाल उठाए हैं। परिवार का कहना है कि गिरफ्तारी के बाद राकेश ने फोन पर बातचीत में बताया कि उसने किसी से रिश्त के पैसे नहीं लिए थे। परिवार के अनुसार राकेश ने बताया कि दो निजी व्यक्तियों ने जबरदस्ती उसके हाथ में पैसे देने का प्रयास किया था।

मालवा एक्सप्रेस पर नरेला आउटर के पास पत्थरबाजी सोनीपत। अंबाला से दिल्ली की तरफ जा रही ट्रेन संख्या 129220 मालवा एक्सप्रेस ट्रेन पर पत्थरबाजी करने का मामला सामने आया है। वारदात नरेला के पास बताई जा रही है, जब किसी ने एम 2 बोगी की सीट नंबर 36 की विंडो के शीशे पर पथराव किया।

कार चालक ने पुलिस वाहन को टक्कर मारने और कर्मियों पर वाहन चढ़ाने का किया प्रयास

खरखौदा। पिपली टोल के पास वाहन चेकिंग के दौरान एक कार चालक ने पुलिस टीम की गाड़ी को टक्कर मारने और पुलिसकर्मियों पर वाहन चढ़ाने का प्रयास किया। घटना के संबंध में अज्ञात कार चालक के खिलाफ केस दर्ज कर कारवाई शुरू की। शिकायतकर्ता ईएएसआई अशोक कुमार ने बताया कि वह टीम के साथ गढ़ी बिंदौली टोल के पास वाहन चेकिंग और नाकाबंदी द्यूटी कर रहे थे। इसी दौरान सफेद रंग की टोयोटा एफ्टीओस कोरोला कार तेज रफ्तार व लापरवाही से आती दिखाई दी। पुलिस ने चालक को रुकने का इशारा

किया, लेकिन कार चालक ने पुलिसकर्मी की ओर गाड़ी चढ़ाने का प्रयास किया। पुलिसकर्मी ने साइड में कूदकर अपनी जान बचाई। पुलिस ने कार का पीछा किया। पीछा करते हुए कार चालक ने रांग साइड में आकर पिपली टोल, खरखौदा की तरफ नीचे उतर गया। पिपली टोल से कुछ पहले चालक ने कथित रूप से पुलिस की गाड़ी के साइड में टक्कर मारकर उसे सामने पड़े पत्थर की तरफ धकेल दिया, जिससे पुलिस की गाड़ी पत्थर से टकरा गई। पुलिस ने अशोक कुमार की लिखित शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर लिया है।

लिफ्ट एक माह, तो एक्स-रे मशीन दो दिन से बंद नागरिक अस्पताल में सरकारी सेवाओं के हाल बेहाल

मरीज बोले, इलाज करवाने के लिए सीढ़ियों या फिर रैंप के सहारे ऊपरी मंजिलों तक पहुंचना पड़ रहा

हरिभूमि न्यूज»सोनीपत

दिल्ली रोड स्थित नागरिक अस्पताल में अव्यवस्था का माहौल खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। तकनीकी खामियों के चलते मरीजों को आए दिन नई-नई परेशानी से जूझना पड़ रहा है। अस्पताल में जहां लिफ्ट एक माह से खराब है, तो वहीं दो दिन से एक्स-रे मशीन बंद होने से मरीजों को सुविधा नहीं मिल पा रही है। मरीजों का आरोप है कि अस्पताल में सरकारी सेवाएं के हाल बेहाल नजर आ रहे हैं, उधर प्रबंधन अपनी जिम्मेदारियों से मुंह फेर रहे हैं।

मरीजों का आरोप है कि अस्पताल में मरीजों की सुविधा के लिए लगाई गई लिफ्ट करीब एक माह से खराब अवस्था में पड़ी है। ऐसे में मरीजों, उनके परिजनों को इलाज करवाने के लिए सीढ़ियों या फिर रैंप के सहारे ऊपरी मंजिलों तक पहुंचना पड़ रहा है। बता दें कि पहली और दूसरी मंजिल पर सर्जिकल वार्ड, डायलिसिस वार्ड और प्रसूता महिलाओं समेत गंभीर मरीजों के वार्ड हैं।



सोनीपत। नागरिक अस्पताल में बंद पड़ी लिफ्ट।



सोनीपत। अस्पताल में बंद पड़ा एक्स-रे कक्ष।

तकनीकी खराबियों से अस्पताल में मरीजों की बड़ी मुश्किलें

ऐसे में बुजुर्गों, गंभीर मरीजों और प्रसूताओं को सबसे अधिक दिक्कत हो रही है। अस्पताल की निचली मंजिल पर तैयार होने वाला खाना भी ऊपरी मंजिलों तक पहुंचाने में कर्मचारियों को परेशानी उठानी पड़ रही है। वहीं दो दिन से एक्स-रे मशीन भी तकनीकी खराबी के कारण बंद है। मशीन का स्कैनर खराब हो गया है। चिकित्सकों की सलाह पर रोजाना करीब 70 से 80 मरीज एक्स-रे करवाने पहुंचते हैं, लेकिन मशीन बंद होने से

उन्हें घंटों इंतजार करना पड़ रहा है। ऐसे में नई मशीन से मरीजों के एक्सरे किए जा रहे हैं। संख्या बढ़ने पर कई मरीजों का बिना जांच करवाए वापस लौटना पड़ रहा है। मरीजों ने अस्पताल प्रशासन से तकनीकी समस्याओं का जल्द समाधान कराने की मांग की है। वहीं अस्पताल में कार्यरत रेडियोग्राफर का कहना है कि सोमवार तक एक्सरे मशीन ठीक करवाकर मरीजों के लिए सेवाएं पुनः प्रारंभ कर दी जाएंगी।

सफाई कर्मियों की हड़ताल व गाड़ियों का अभाव शहर को स्वच्छता की लगा रहे दाग

चार कॉलोनियों पर मात्र एक गाड़ी के सहारे की व्यवस्था

हरिभूमि न्यूज»सोनीपत

नगर निगम क्षेत्र में लंबे समय से प्रभावित सफाई व्यवस्था के कारण स्थिति लगातार बिगड़ने लगी है। सड़कों व गलियों किनारे जगह-जगह लगे कूड़े के ढेर व दुर्गंध से लोगों में रोष बढ़ता जा रहा है। उधर सरकार पर वादाखिलाफी का आरोप लगाकर 6 अगस्त से सविदा व ठेका सफाई कर्मचारियों की हड़ताल जारी है। इस बीच सफाई एजेंसी के पास डोर-टू-डोर कूड़ा उठान गाड़ियों की कमी का मामला भी सामने आया है। अधिकारियों के अनुसार सफाई एजेंसी पर करीब 30 गाड़ियों की कमी है। ऐसे में 4 कॉलोनियों पर मात्र एक गाड़ी के सहारे सफाई व्यवस्था निर्भर होकर रह गई है, लेकिन अव्यवस्था शहर की स्वच्छता को दाग लगा रहे हैं। कूड़ा अब सड़कों व सरकारी कार्यालय के प्रवेश द्वार तक पहुंच चुका है। लोगों को आवागमन में परेशानी झेलनी पड़ रही है।



सोनीपत। रेलवे रोड पर लोक निर्माण विभाग कार्यालय के बाहर सड़क पर फैला कूड़ा।



सोनीपत। सोनीपत ब्रॉ कॉलोनी के पास लगा कूड़े का ढेर।

गाड़ियों की कमी से शहर में सफाई व्यवस्था चरमराई
बता दें कि नगर निगम व एजेंसी के समझौते अनुसार शहर की सफाई व्यवस्था के लिए 90 कूड़ा उठान वाली गाड़ियों का प्रवधान रखा गया है, लेकिन एजेंसी के पास 30 गाड़ियों का अभाव है। ऐसे में शहर में डोर-टू-डोर कूड़ा उठान के लिए मात्र 55 से 60 गाड़ियों का संचालन हो रहा है। यह गाड़ियां सभी कॉलोनियों में नहीं पहुंच पा रही हैं। यही कारण है कि रोजाना डोर-टू-डोर कूड़ा नहीं उठा पा रहा है। जिससे कूड़ा अब घरों से निकलकर सड़कों व गलियों किनारे पहुंचने लगा है। उधर संविदा व ठेका सफाई कर्मचारियों के हड़ताल पर जाने से शहर की सफाई व्यवस्था रूक गई है। जबकि एजेंसी की जुलाई माह में शहर के लाइव पर पुराने शहर स्थित पश्चिमी क्षेत्र के लिए 6 माह, बलिक नए शहर पूर्वी क्षेत्र के लिए 8 माह का रि-टेंडर जारी किया गया है। निगम की ओर से टेंडर जारी करने के बावजूद शहर की सफाई व्यवस्था चरमरा गई है। ऐसे में जनप्रतिनिधियों को शहर की विभिन्न गलियों से लंबे समय से कूड़ा उठान नहीं होने की शिकायतें मिल रही हैं। अधिकतर स्थानों पर करीब 10 दिन से गाड़ियां नहीं पहुंच रही हैं, जिससे लोगों को परेशानी होती है। लोगों का आरोप है कि एजेंसी कर्मचारियों की लापरवाही का खमियाजा शहरवासियों को भुगतना पड़ रहा है। लोगों की मांग है कि अगर एजेंसी शहर की सफाई व्यवस्था संभालने में असमर्थ है, तो सरकार को उसे भुगतान भी नहीं करना चाहिए। लोगों ने सरकार से जल्द हड़ताल समाप्त करवाकर सफाई और कूड़ा उठान व्यवस्था बहाल करवाने की मांग की है।

स्कूल से निकाले जाने के दो दिन बाद लापता छात्र का शव झूले पर मिला, हत्या की आशंका

सोनीपत। गांव सबौली के राजकीय विद्यालय में दसवीं कक्षा में पढ़ने वाले साढ़े 16 वर्षीय छात्र विशाल का शव शनिवार सुबह गांव के स्टेडियम परिसर में झूले से फंदे पर लटका मिलने से सनसनी फैल गई। विशाल चार दिन से लापता था। परिजनों का आरोप है कि 18 अगस्त को स्कूल में दो सहपाठियों से विवाद के बाद एक महिला शिक्षिका ने उसकी डंडे से पिटाई की और उसे स्कूल से बाहर निकाल दिया था। शनिवार सुबह उसका शव घर से करीब आधा किलोमीटर दूर स्टेडियम में मिलने के बाद परिजनों ने हत्या कर शव को झूले से लटकाने की आशंका जताई है। परिवार ने मामले की निष्पक्ष जांच और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग के लिए रोष जताया। मूलरूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गांव भरगणपुर निवासी प्रमोद फिलहाल गांव नाथूपुर में परिवार के साथ रहते हैं। प्रमोद के मुताबिक 18 अगस्त को विशाल रोज की तरह स्कूल गया था। उसका दो विद्यार्थियों के साथ किसी बात को लेकर विवाद हो गया। आरोप है कि विवाद की जानकारी मिलने के बाद एक महिला शिक्षिका ने विशाल की डंडे से पिटाई की। इसके बाद विशाल और एक अन्य छात्र को विद्यालय से बाहर निकाल दिया गया।

सोनीपत। गांव सबौली के राजकीय विद्यालय में दसवीं कक्षा में पढ़ने वाले साढ़े 16 वर्षीय छात्र विशाल का शव शनिवार सुबह गांव के स्टेडियम परिसर में झूले से फंदे पर लटका मिलने से सनसनी फैल गई। विशाल चार दिन से लापता था। परिजनों का आरोप है कि 18 अगस्त को स्कूल में दो सहपाठियों से विवाद के बाद एक महिला शिक्षिका ने उसकी डंडे से पिटाई की और उसे स्कूल से बाहर निकाल दिया था। शनिवार सुबह उसका शव घर से करीब आधा किलोमीटर दूर स्टेडियम में मिलने के बाद परिजनों ने हत्या कर शव को झूले से लटकाने की आशंका जताई है। परिवार ने मामले की निष्पक्ष जांच और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग के लिए रोष जताया। मूलरूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गांव भरगणपुर निवासी प्रमोद फिलहाल गांव नाथूपुर में परिवार के साथ रहते हैं। प्रमोद के मुताबिक 18 अगस्त को विशाल रोज की तरह स्कूल गया था। उसका दो विद्यार्थियों के साथ किसी बात को लेकर विवाद हो गया। आरोप है कि विवाद की जानकारी मिलने के बाद एक महिला शिक्षिका ने विशाल की डंडे से पिटाई की। इसके बाद विशाल और एक अन्य छात्र को विद्यालय से बाहर निकाल दिया गया।

जेल में बंद युवक का बैरक के बाथरूम में फंदे पर मिला शव

मैडिकल बोर्ड से कराया पोस्टमार्टम, मामा ने उठाए सवाल

सोनीपत। चचेरे भाई की हत्या के मामले में सोनीपत जिला कारागार में यात्रिक हिरासत के तहत बंद गांव खंदराल निवासी विनोद का शव शनिवार को उसकी बैरक के बाथरूम में फंदे पर लटका मिला। शव मिलने की सूचना मिलते ही जेल प्रशासन में हड़कंप मच गया। जेल कर्मचारियों ने तुरंत वरिष्ठ अधिकारियों को मामले की

जानकारी दी। इसके बाद सिटी पुलिस ने जेल पहुंचकर घटनास्थल का निरीक्षण किया और जांच शुरू की। पुलिस के अनुसार विनोद का शव बैरक के बाथरूम में रोजानादान से चादर के बनावे गए फंदे पर लटका मिला था। मौत के कारणों का पता लगाने के लिए शव को खानपुर स्थित मैडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया, जहां पोस्टमार्टम कराया। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट और जांच के तथ्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

मौत की हो पूरी जांच
विनोद की मौत की सूचना मिलने के बाद उसका मामा राजेश भी अस्पताल पहुंचा। उन्होंने मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की। राजेश ने बताया कि घटना से एक दिन पहले ही उनकी विनोद से बातचीत हुई थी। उन्होंने विनोद के लिए पैसे भी इंतजाम थे। बातचीत के दौरान ऐसा कुछ महसूस नहीं हुआ था जिससे इस तरह की घटना की आशंका हो। अगले दिन जेल से विनोद के फंदे पर लटके मिलने की सूचना मिली। उन्होंने कहा कि जेल में बंद युवक की मौत किन परिस्थितियों में हुई, इसकी पूरी जांच होनी चाहिए। परिवार ने घटना से जुड़े सभी पहलुओं को सामने लाने की मांग की है।



South Point

GROUP OF EDUCATION

Run by Mange Ram Educational and Charitable Trust (Regd.)

Unique, Learning, Experience

Few Seats are Vacant

Direct Admission

COURSES OFFERED

South Point Institute of Technology & Management

Aop. by AICTE, New Delhi, Aff. to State Technical University DCRUST, Murthal "NAAC 'A' Graded"

B.Tech./LEET (CSE, ECE, Mech., Civil) M.Tech. (CSE, ECE)

BCA /MCA /BBA /MBA - Dual Specialization

South Point School of Polytechnic

Approved by AICTE, New Delhi, Aff. to Haryana State Board of Technical Education, Panchkula

Diploma/LEET (CSE, ECE, EE, Civil, Mech.) • DMLT/LEET

South Point College of Law

Aop. by Bar Council of India, New Delhi, Aff. to MDU, Rohtak "NAAC 'A+' Graded"

B.A.LL.B. (Hons.) • LL.B. (Hons.) • LL.M.

South Point College of Pharmacy

Aop. by Pharmacy Council of India, New Delhi, Aff. to Pt. B.D. Sharma University of Health Sciences, Rohtak & Haryana State Board of Technical Education, Panchkula

D. Pharm • B. Pharm /LEET

South Point P.G. Degree College

Aop. by Deptt. of Higher Education, H., Aff. to MDU, Rohtak "NAAC 'A+' Graded"

B.A. / B.Com. / B.Sc. (Med., Non-Med.) M.A. (Eng., Hindi, History, Pol.Sc.)

M.Sc. (Physics, Chemistry, Maths), M.Com. • PGD (Yoga Science)

B.Ed. • M.Ed. • B.P.Ed.

98120 20033

98124 21919

90344 72910

SUNDAY OPEN

• SONEPAT

• RATANGARH

• MURTHAL

www.southpoint.net.in

बि.पी.एड. (B.P.Ed.) में दाखिला आरंभ

पी.टी.आई. तथा डी.पी.ई. (शांतिरक्षक शिक्षा निदेशक) के पद पर होगी नियुक्ति

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) से मान्यता प्राप्त एवं इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मेरठ, रेवाड़ी (UP) से सम्बंधित महाराणा प्रताप कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, बानीन (झारख-कनौठा), जिला मेडिकल (हरियाणा) में सत्र 2026-28 हेतु बी.पी.एड. (B.P.Ed.) (डी.पी.ई. कोर्स) में दाखिला आरंभ हो गया है। बी.पी.एड. में प्रवेश हेतु स्नातक में 50% अंक तथा राज्य स्तर का खेल का प्रमाण पत्र होना आवश्यक है। एस.सी. विद्यार्थियों को सरकार द्वारा छात्रवृत्ति दी जाती है। इच्छुक विद्यार्थी सीधे कॉलेज में दाखिला ले सकते हैं तथा www.mpcokenania.com व कॉलेज फोन नं. 9467834482, 8053910428 पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। (Adv.)



दोस्त या रिश्तेदार की मदद पड़ेगी भारी

लोन में गारंटर बनने के कई नुकसान

बिजनेस डेस्क

दोस्त, रिश्तेदार या करीबी व्यक्ति मुश्किल समय में आर्थिक मदद मांगता है तो मना करना आसान नहीं होता। कई बार व्यक्ति खुद लोन लेने की स्थिति में होता है, लेकिन बैंक की शर्तों के कारण उसे गारंटर की जरूरत पड़ती है। ऐसे में भावनात्मक रिश्ते के कारण लोन बिना पूरी जानकारी लिए लोन गारंटर बनने के लिए तैयार हो जाते हैं, लेकिन गारंटर बनना महज एक औपचारिकता नहीं है। इसका अर्थ है कि यदि मुख्य उधारकर्ता अपनी देनदारी पूरी नहीं करता, तो गारंटी की शर्तों के अनुसार बैंक आपसे भी बकाया रकम की वसूली कर सकता है। इसलिए किसी के लोन की गारंटी देने से पहले यह समझना जरूरी है कि इससे आपके क्रेडिट रिकॉर्ड, भविष्य में लोन लेने की क्षमता और व्यक्तिगत वित्त पर क्या असर पड़ सकता है।

गारंटर बनने का मतलब क्या

लोन में गारंटर वह व्यक्ति होता है जो बैंक या वित्तीय संस्थान को यह आश्वासन देता है कि यदि मुख्य उधारकर्ता अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं करता तो लागू गारंटी की शर्तों के अनुसार वह देनदारी पूरी करेगा। इसलिए किसी दस्तावेज पर सिर्फ इसलिए हस्ताक्षर नहीं करने चाहिए कि सामने वाला दोस्त या रिश्तेदार है। हस्ताक्षर करने से पहले यह समझना जरूरी है कि आप किस रकम, किस अवधि और किन शर्तों के लिए गारंटी दे रहे हैं।

गारंटर बनते ही क्रेडिट स्कोर घटता है

नहीं, केवल गारंटर बनने से अपने आप क्रेडिट स्कोर खराब होना जरूरी नहीं है। अगर मुख्य उधारकर्ता समय पर ईएमआई चुका रहा है और लोन खाते में कोई डिफॉल्ट नहीं हो रहा है, तो सामान्य तौर पर केवल गारंटर होने की वजह से आपके क्रेडिट रिकॉर्ड पर नकारात्मक असर नहीं पड़ता। लेकिन समस्या तब शुरू हो सकती है जब मुख्य उधारकर्ता ईएमआई चुकाने में लगातार चूक करता है। ऐसी स्थिति में लोन खाते से जुड़ी डिफॉल्ट जानकारी गारंटर के क्रेडिट प्रोफाइल को भी प्रभावित कर सकती है। लगातार भुगतान में चूक होने से भविष्य में आपकी क्रेडिट हिस्ट्री पर नकारात्मक असर पड़ने का जोखिम बढ़ सकता है। इसलिए गारंटर बनने के बाद भी लोन की स्थिति पर नजर रखना जरूरी है।

बड़ा खतरा : कर्ज चुकाने की जिम्मेदारी

गारंटर बनने का सबसे महत्वपूर्ण जोखिम आर्थिक है। यदि मुख्य उधारकर्ता लोन की किस्तें नहीं चुका पाता है तो बैंक या वित्तीय संस्थान गारंटी समझौते की शर्तों के अनुसार गारंटर से भी बकाया रकम की वसूली कर सकता है। यानी जिस लोन का पैसा आपने लिया ही नहीं, उसकी जिम्मेदारी कुछ परिस्थितियों में आपके ऊपर भी आ सकती है। यही वजह है कि गारंटर बनने से पहले यह सवाल खुद से जरूर पूछें। अगर सामने वाला व्यक्ति कल से ईएमआई देना बंद कर दे तो क्या में इस लोन की जिम्मेदारी संभाल सकता हूँ? अगर इसका जवाब 'नहीं' है तो अगर रिश्तेदारी या दोस्ती के दबाव में गारंटर बनना जोखिम भरा हो सकता है।

लोन लेने में आ सकती है दिक्कत

गारंटर बनने का असर केवल क्रेडिट स्कोर तक सीमित नहीं है। जब आप भविष्य में होम लोन, कार लोन या कोई अन्य बड़ा कर्ज लेने के लिए अपेदन करते हैं तो बैंक आपकी मौजूदा वित्तीय जिम्मेदारियों और क्रेडिट प्रोफाइल का आकलन कर सकता है। जिस लोन की आपने गारंटी दी है, वह आपकी वित्तीय प्रोफाइल के आकलन में महत्वपूर्ण हो सकता है। खासकर यदि उस लोन में भुगतान संबंधी समस्या चल रही हो तो आपके लिए नया कर्ज लेना कठिन हो सकता है या बैंक अतिरिक्त जांच कर सकता है।

रिश्तेदार है तो भी पहले जांच करें

गारंटर बनने से पहले केवल रिश्ते को आधार न बनाएं। यह जानना जरूरी है कि जिस व्यक्ति के लोन की गारंटी आप दे रहे हैं, उसकी आय कितनी है, उसकी मौजूदा ईएमआई कितनी है और उस पर पहले से कितना कर्ज है। यह भी देखें कि उसकी बीमारी या कारोबार कितना स्थिर है। यदि उसकी आय अनिश्चित है या पहले से कई कर्ज चल रहे हैं तो गारंटर बनने का जोखिम बढ़ सकता है।

दस्तावेज पढ़े बिना न करें हस्ताक्षर

गारंटी दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से पहले बैंक से स्पष्ट रूप से पूछें कि आपकी जिम्मेदारी की सीमा क्या है। क्या गारंटी केवल मूल रकम तक सीमित है या इसमें ब्याज, शुल्क और अन्य देनदारियां भी शामिल हो सकती हैं? यह जानकारी दस्तावेज की शर्तों से ही स्पष्ट होगी। इसलिए किसी बैंक कर्मचारी, एजेंट या परिचित के कहने मात्र पर दस्तावेज पर हस्ताक्षर न करें। जरूरत हो तो स्वतंत्र वित्तीय या कानूनी सलाह भी ली जा सकती है।

ईएमआई की जानकारी लेते रहें

अगर आपने किसी के लोन की गारंटी दी है तो यह मानकर न चले कि अब आपकी कोई भूमिका नहीं है। मुख्य उधारकर्ता से समय-समय पर ईएमआई भुगतान की स्थिति की जानकारी लेते रहें। किसी भुगतान में देरी की जानकारी मिले तो समस्या बढ़ने से पहले उधारकर्ता से बात करें। शुरुआती स्तर पर समस्या का समाधान करना लंबे समय तक चलने वाले डिफॉल्ट से बेहतर है।

दोस्ती और पैसा, दोनों को अलग रखें

किसी करीबी की मदद करना अच्छी बात है, लेकिन मदद का अर्थ अपनी आर्थिक सुरक्षा को जोखिम में डालना नहीं होना चाहिए। यदि आपको लगता है कि सामने वाला व्यक्ति लोन चुकाने की स्थिति में नहीं है तो गारंटर बनने के बजाय अपनी क्षमता के अनुसार सीमित आर्थिक सहायता करना ज्यादा सुरक्षित विकल्प हो सकता है।

फैसला लेने से पहले ये जरूर पूछें

- » क्या मैं इस व्यक्ति की आय और मौजूदा कर्ज को समझता हूँ?
- » अगर वह ईएमआई नहीं चुका पाया तो क्या मैं संभावित वित्तीय जिम्मेदारी संभाल सकता हूँ?
- » क्या मैंने गारंटी दस्तावेज की सभी शर्तें पढ़ी हैं?
- » क्या भविष्य में मुझे खुद होम, कार या किसी दूसरे बड़े लोन की जरूरत पड़ सकती है?

मदद करें, लेकिन जोखिम समझकर

लोन गारंटर बनना दोस्त या रिश्तेदार की मदद करने का एक तरीका हो सकता है, लेकिन इसमें वित्तीय जोखिम भी जुड़ा है। समय पर ईएमआई वाली रकमे पर समस्या नहीं आती, लेकिन मुख्य उधारकर्ता के डिफॉल्ट की स्थिति में गारंटर की क्रेडिट प्रोफाइल और आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। इसलिए गारंटर बनने से पहले भावनात्मक रिश्ते से ज्यादा महत्वपूर्ण अपनी भुगतान क्षमता, दस्तावेज की शर्तों और भविष्य की वित्तीय जरूरतों को समझना है। किसी की मुश्किल में साथ देना अच्छी बात है, लेकिन ऐसी मदद न करें जो बाद में आपके ही परिवार की आर्थिक सुरक्षा को मुश्किल में डाल दे।

दस साल में चार लार्ज एंड मिड कैप फंड ने दिया शानदार रिटर्न

10 वर्ष में 4 लार्ज एंड मिड कैप फंड ने दिया शानदार रिटर्न, हर माह 10000 की एसआईपी से 12 लाख का निवेश 31 लाख से ज्यादा, चारों फंडों ने दिया 18 से 19% तक एक्सआईआरआर

निवेश नत्रा बिजनेस डेस्क

लंबी अवधि में संपत्ति बनाने के लिए म्यूचुअल फंड की लार्ज एंड मिड कैप श्रेणी निवेशकों के लिए एक विकल्प हो सकती है। इस श्रेणी के फंड बड़ी और स्थापित कंपनियों के साथ मध्यम आकार की तेजी से बढ़ने वाली कंपनियों में निवेश करते हैं। नियमों के अनुसार, ऐसे फंडों को कम से कम 35 प्रतिशत राशि लार्ज कैप और 35 प्रतिशत मिड कैप कंपनियों में लगानी होती है। इस तरह कम से कम 70 प्रतिशत पोर्टफोलियो देश की बाजार पूंजीकरण के लिहाज से शीर्ष 250 कंपनियों में रहता है। 18 अगस्त 2026 को उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक, चार फंडों का निवेश बढ़कर 31 लाख रुपये से ज्यादा हो गया। इनमें सबसे बेहतर प्रदर्शन इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड का रहा, जिसने 19.3 प्रतिशत का एक्सआईआरआर दिया।

इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड

इस सूची में इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड पहले स्थान पर है। अगस्त 2007 में शुरू हुआ यह फंड पहले इनवेस्को इंडिया ग्रोथ अपॉय्च्युनिटीज फंड के नाम से जाना जाता था। फंड शेयरों का चयन करने के लिए ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर, दोनों तरह की रणनीति का इस्तेमाल करता है। इसमें किसी एक सेक्टर या निवेश शैली पर अत्यधिक निर्भरता नहीं रखी जाती। इस फंड में 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर कुल 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर करीब 33.2 लाख रुपये हो गया। इस आधार पर इसका एक्सआईआरआर 19.3 प्रतिशत रहा। फंड के प्रमुख निवेशों में इंटरनेल, मैक्स हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट, इंटरग्लोब एविएशन, आईसीआईसीआई बैंक और प्रेस्टिज एस्टेट्स प्रोजेक्ट्स शामिल हैं। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, करीब 38.1 प्रतिशत निवेश लार्ज कैप, 35.9 प्रतिशत मिड कैप और 23.1 प्रतिशत स्मॉल कैप कंपनियों में था।

क्वांट लार्ज एंड मिड कैप फंड

दूसरे स्थान पर क्वांट लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। दिसंबर 2006 में शुरू हुआ यह फंड शेयरों के चयन में आंकड़ों पर आधारित रणनीति अपनाता है। फंड हाउस का वीएलआरटी ढांचा कंपनियों के मूल्यांकन, नकदी की उपलब्धता, जोखिम और निवेश के सही समय जैसे पहलुओं को ध्यान में रखता है। 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लार्ज एंड मिड कैप फंड

तीसरे स्थान पर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। जुलाई 1998 में शुरू हुए इस फंड को 2018 में मौजूदा लार्ज एंड मिड कैप श्रेणी के अनुसार पुनर्गठित और नामित किया गया था। इसलिए 2018 से पहले के प्रदर्शन की मौजूदा रणनीति के साथ सीधे तुलना करना उचित नहीं होगा। 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर करीब 31.1 लाख रुपये हो गया। इसका एक्सआईआरआर 18.1 प्रतिशत रहा। फंड का निवेश बड़ी स्थापित कंपनियों के साथ उभरती कंपनियों में भी है। यह अपेक्षाकृत मजबूत बुनियादी स्थिति वाली और उचित मूल्यांकन वाली कंपनियों पर ध्यान देता है। इसके प्रमुख निवेशों में एसबीआई काउर्स एंड पेमेंट सर्विसेज, इंटरग्लोब एविएशन, बजाज फिनसर्व, सोना वीएलडब्ल्यू प्रिसिजन फोर्जिंग्स और इंडसईड बैंक शामिल रहे।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लार्ज एंड मिड कैप फंड

तीसरे स्थान पर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। जुलाई 1998 में शुरू हुए इस फंड को 2018 में मौजूदा लार्ज एंड मिड कैप श्रेणी के अनुसार पुनर्गठित और नामित किया गया था। इसलिए 2018 से पहले के प्रदर्शन की मौजूदा रणनीति के साथ सीधे तुलना करना उचित नहीं होगा। 10 साल तक हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी करने पर 12 लाख रुपये का निवेश बढ़कर करीब 31.1 लाख रुपये हो गया। इसका एक्सआईआरआर 18.1 प्रतिशत रहा। फंड का निवेश बड़ी स्थापित कंपनियों के साथ उभरती कंपनियों में भी है। यह अपेक्षाकृत मजबूत बुनियादी स्थिति वाली और उचित मूल्यांकन वाली कंपनियों पर ध्यान देता है। इसके प्रमुख निवेशों में एसबीआई काउर्स एंड पेमेंट सर्विसेज, इंटरग्लोब एविएशन, बजाज फिनसर्व, सोना वीएलडब्ल्यू प्रिसिजन फोर्जिंग्स और इंडसईड बैंक शामिल रहे।

निवेश के ये फॉर्मूले, अपनाएं कभी नहीं रहेगा पैसे का संकट

जानकारी बिजनेस डेस्क

पैसे को दोगुना से चार गुना तक आसानी से कर सकेंगे

इमरजेंसी फंड व इक्विटी डेट का संतुलन बनाएंगे

निवेश की दुनिया में विकल्पों की कोई कमी नहीं है। बैंक एफडी, बॉन्ड, म्यूचुअल फंड, इक्विटी, डेट और सोने जैसे कई माध्यमों में पैसा लगाया जा सकता है। लेकिन निवेश में सफलता केवल इस बात पर निर्भर नहीं करती कि पैसा कहाँ लगाया गया है, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि कितनी राशि निवेश की जा रही है, कितने समय के लिए निवेश किया जा रहा है और जोखिम को किस तरह नियंत्रित किया जा रहा है। इसी उद्देश्य से वित्तीय योजना में कुछ आसान नियमों का इस्तेमाल किया जाता है। इन नियमों की मदद से निवेशक मोटे तौर पर यह समझ सकता है कि उसका पैसा कितने समय में दोगुना या चार गुना हो सकता है, आय का कितना हिस्सा खर्च और बचत में जाना चाहिए तथा इमरजेंसी के लिए कितनी रकम अलग रखनी जरूरी है। हालांकि ये नियम अनुमान देने वाले सामान्य वित्तीय फॉर्मूले हैं, इन्हें निश्चित रिटर्न की गारंटी नहीं माना जाना चाहिए।

रूल ऑफ 72, 114 और 144 कंपाउंडिंग को समझने के आसान तरीके हैं, जबकि 50-30-20, 100 माइनस एज और 10 फीसदी निवेश जैसे नियम व्यक्तिगत वित्त को व्यवस्थित करने में मदद कर सकते हैं। लेकिन किसी भी नियम को अंतिम निवेश सलाह नहीं माना जाना चाहिए। सही रणनीति बनाने के लिए निवेशक को अपनी आय, उम्र, जोखिम क्षमता, वित्तीय लक्ष्य, कर्ज और निवेश की अवधि को ध्यान में रखना चाहिए। सबसे जरूरी बात यह है कि पहले इमरजेंसी फंड और पर्याप्त बीमा जैसी वित्तीय सुरक्षा तैयार करें, फिर लक्ष्य के मुताबिक नियमित और अनुशासित निवेश करें। निवेश में जल्द अमीर बनने के बजाय लंबे समय तक टिके रहना ज्यादा महत्वपूर्ण है।

1. रूल ऑफ 72

रूल ऑफ 72 का इस्तेमाल यह अनुमान लगाने के लिए किया जाता है कि किसी निवेश को दोगुना होने में लगभग कितना समय लग सकता है। इसके लिए 72 को अनुमानित सालाना रिटर्न से भाग दिया जाता है।

फॉर्मूला: 72 ÷ अनुमानित रिटर्न = पैसा दोगुना होने का अनुमानित समय
उदाहरण के लिए, अगर किसी निवेश से सालाना 12 फीसदी रिटर्न मिलने की उम्मीद है तो 72÷12 = 6। यानी अनुमान के तौर पर पैसा करीब छह साल में दोगुना हो सकता है। इसी तरह चार साल में पैसा दोगुना करने के लिए करीब 18 फीसदी सालाना रिटर्न की जरूरत होगी। बाजार आधारित निवेश में वास्तविक रिटर्न अलग हो सकता है।

2. रूल ऑफ 114

अगर आप यह जानना चाहते हैं कि आपका निवेश लगभग कितने समय में तीन गुना हो सकता है तो रूल ऑफ 114 इस्तेमाल किया जाता है।

फॉर्मूला: 114 ÷ अनुमानित सालाना रिटर्न = 12 फीसदी अनुमानित सालाना रिटर्न के मामले में 114÷12 = 9.5 साल। यानी इस फॉर्मूले के अनुसार निवेश को तीन गुना होने में करीब साढ़े नौ साल लग सकते हैं।

3. रूल ऑफ 144

रूल ऑफ 144 से यह अनुमान लगाया जाता है कि निवेश कितने समय में चार गुना हो सकता है।



फॉर्मूला: 144 ÷ अनुमानित सालाना रिटर्न = अगर अनुमानित रिटर्न 12 फीसदी सालाना है तो 144÷12 = 12 साल। यानी इस गणना के अनुसार पैसा करीब 12 साल में चार गुना हो सकता है। कंपाउंडिंग का असर लंबी अवधि में निवेश की वृद्धि को काफी प्रभावित करता है।

4. 50-30-20 रूल

मासिक बजट को व्यवस्थित रखने के लिए 50-30-20 नियम काफी लोकप्रिय है। इसके अनुसार आय का करीब 50 फीसदी हिस्सा जरूरी खर्चों, 30 फीसदी गैर-जरूरी जरूरतों या इच्छाओं और 20 फीसदी बचत एवं निवेश के लिए रखा जा सकता है।

हालांकि हर व्यक्ति की आय, पारिवारिक

जिम्मेदारियां और खर्च अलग होते हैं। इसलिए इसे एक शुरुआती बजटिंग फ्रेमवर्क की तरह इस्तेमाल करना बेहतर है। जिन लोगों पर कर्ज का बोझ अधिक है, वे निवेश से पहले महंगे कर्ज को कम करने पर भी ध्यान दे सकते हैं।

5. 100 माइनस एज रूल

निवेश पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट का अनुपात तय करने के लिए 100 माइनस एज नियम का इस्तेमाल किया जाता रहा है। इसमें निवेशक की उम्र को 100 से घटाया जाता है। बची हुई संख्या को इक्विटी में निवेश का संभावित प्रतिशत माना जाता है। मसलन, 30 साल के निवेशक के लिए 100-30 यानी 70 फीसदी इक्विटी और 30 फीसदी डेट का

अनुपात माना जा सकता है। उम्र बढ़ने के साथ इक्विटी का हिस्सा कम करने का विचार जोखिम को नियंत्रित करने से जुड़ा है।

6. न्यू, 10% निवेश नियम

इस नियम के अनुसार आय का कम से कम 10 फीसदी हिस्सा लंबी अवधि के लक्ष्यों के लिए निवेश किया जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात नियमित निवेश है। आय बढ़ने के साथ निवेश की रकम भी बढ़ाते रहना चाहिए। मसलन, अगर किसी व्यक्ति की मासिक आय 50 हजार रुपये है तो शुरुआत में कम से कम 5 हजार रुपये लंबी अवधि के निवेश के लिए अलग रखे जा सकते हैं। भविष्य में वेतन बढ़ने पर निवेश राशि बढ़ाने से कंपाउंडिंग का लाभ और मजबूत हो सकता है।

7. इमरजेंसी फंड रूल

सारी बचत को निवेश कर देना समझदारी नहीं है। अचानक नौकरी जाने, बीमारी, घर की मरम्मत या किसी अन्य आपात स्थिति में तुरंत उपलब्ध पैसे की जरूरत पड़ सकती है। इसलिए कम से कम छह महीने के जरूरी खर्चों के बराबर इमरजेंसी फंड बनाने की सलाह दी जाती है। अगर किसी परिवार का जरूरी मासिक खर्च 40 हजार रुपये है तो छह महीने के दिहाब से करीब 2.4 लाख रुपये का आपातकालीन फंड लक्ष्य बनाया जा सकता है। इस रकम को ऐसे माध्यम में रखना बेहतर होता है जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से उपलब्ध हो।

खबर संक्षेप



बीआईटीएस सोनीपत में स्टूडेंट इंडवशन कार्यक्रम

सोनीपत। भारत इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (बीआईटीएस), सोनीपत में स्टूडेंट इंडवेशन प्रोग्राम (एसआईपी) 2026 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य नवागंतुक विद्यार्थियों को संस्थान के शैक्षणिक वातावरण से परिचित कराने के साथ उनके व्यक्तित्व, नेतृत्व क्षमता और कौशल विकास को बढ़ावा देना रहा। कार्यक्रम में चैयरपर्सन बलराज कुंडू, विश्व कुंडू, योगेंद्र राठी, निदेशक डॉ. पूनम, डॉ. सीमा राठी सहित विभिन्न विभागों के फैकल्टी सदस्य मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान इंडप्रीत ने डिजिटल लर्निंग एवं एआई उपकरणों, डॉ. राम मेहर श्योजन ने 'द हाइजेक्ट बेन' तथा डॉ. आशीष सांगवान, डेंटल सर्जन ने स्वास्थ्य एवं दंत स्वच्छता विषय पर ज्ञानवर्धक सत्र आयोजित किए।



सीएलजी की बैठक में तीन शिकायतों पर सुनवाई

सोनीपत। कन्सुमिटी पुलिस लायजनिंग ग्रुप (सीएलजी) की बैठक आयोजित की गई। बैठक में नागरिकों से संबंधित तीन शिकायतों और मामलों की सुनवाई की गई। शिकायतकर्ताओं और संबंधित पक्षों की बात सुनने के बाद पुलिस अधिकारियों व सीएलजी सदस्यों ने मामलों के तथ्यों पर विचार-विमर्श किया। दो मामलों का आपसी संवाद और आवश्यक कार्रवाई के माध्यम से मौके पर ही निस्तारण किया गया, जबकि एक मामले में आगे की सुनवाई के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। पिंकी देवी एवं महक दहिया से संबंधित मामले में दोनों पक्षों को 29 अगस्त को अपने-अपने जमानास्थियों के साथ सीएलजी के समक्ष उपस्थित होने के निर्देश दिए गए। बैठक में डॉ. राज सिंह सांगवान, संजय सिंगला, सतीश रमेश जैन सहित सीएलजी सदस्य मौजूद रहे। पुलिस की ओर से एसआई सुनील, एचसी पूजा सहित अन्य पुलिसकर्मों उपस्थित रहे।

राजलू गढ़ी माइनर के पास मिला कारपेंटर का शव, बेटे ने जताई हत्या की आशंका

गन्नीर। राजलू गढ़ी माइनर के पास पुरुषणा के कारपेंटर का शव पड़ा मिला। सूचना मिलते ही थाना गन्नीर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। वहीं, मृतक के बेटे ने पिता की हत्या की आशंका जताते हुए मामले की जांच की मांग की है। जानकारी के अनुसार रामदेव की गांव का ही एक व्यक्ति बाइक पर बैठकर घर से लेकर गया था। घर से निकलने का सीसीटीवी फुटेज भी खाने आया है, जिसमें रामदेव बाइक सवार व्यक्ति के साथ जाते हुए दिखाई दे रहा है। इसके बाद राजलू गढ़ी माइनर के पास रामदेव का शव मिला। थाना मिलने की सूचना से रवजन में हड़कंप मच गया। मृतक के बेटे दीपक का आरोप है कि पिता को गांव का हरिचंद घर से बाइक पर ले गया था। जिसके बाद उनकी मौत हुई, इसलिए उन्हें हत्या की आशंका है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करवाया और बाद में स्वजन को सौंप दिया। पुलिस सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही है। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों का पता चल सकेगा।



बाल अधिकार व पॉक्सो अधिनियम को लेकर विद्यार्थियों को किया जागरूक

सोनीपत। ज्ञान गंगा माटेसरी एंड मॉडल स्कूल, न्यू नंदवानी नगर में जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के तत्वावधान में बाल अधिकार, संरक्षण और बाल यौन अपराधों से संरक्षण अधिनियम (पॉक्सो एक्ट) को लेकर जागरूकता शिविर लगाया गया। स्कूल चैयरमैन सुधीर जैन, डायरेक्टर ध्रुव जैन और प्राचार्या मीनाक्षी खुराना ने दीर्घ प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। लीगल एड कारोसिल पडवोकेट रीता धनखड़ और जिला बाल संरक्षण कार्यालय से प्रेमलता ने विद्यार्थियों को बाल अधिकारों और पॉक्सो अधिनियम के महत्वपूर्ण प्रावधानों की जानकारी दी। इस अवसर पर अध्यापक सतीश, अध्यापिका कविता, रोजी, मेधा, काजल, शालू, मावना, दिव्या, पूजा, नीरू, सीमा, ज्योति, कविता नैन, कोमिला, राजनी, पारस, निशी, पिकी, मोनिका दूहन सहित सभी स्टाफ मौजूद रहा।



बधिर बच्चों संग सेफ इंडिया फाउंडेशन ने बांटी खुशियां

सोनीपत। सेफ इंडिया फाउंडेशन के तत्वावधान में श्रवण व वाणी केंद्र, न्यू कोर्ट रोड स्थित बधिर बच्चों के विद्यालय में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें जीवीएस इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट की छात्राओं ने बच्चों के साथ राखी व आर्ट एंड क्राफ्ट गतिविधियों में हिस्सा लिया। छात्रों ने बच्चों को विभिन्न क्राफ्ट तकनीक सिखाने के साथ उनके साथ समय बिताया। मुस्कान, इशारों और भावनाओं के जरिए बच्चों से संवाद कर उन्हें अपनापन और खुशी का अहसास कराया। सेफ इंडिया फाउंडेशन के प्रोजेक्ट इंचार्ज अविनाश सेठी और बलराज वशिष्ठ ने बताया कि संस्था तीन वर्षों से बच्चों के लिए मेजबान, स्कूल ड्रेस, कपों-किताबों व अन्य सुविधाएं उपलब्ध करा रही है। चैयरमैन वाई. के. त्यागी, प्रधान संजय सिंगला व स्कूल इंचार्ज मोहित डानर ने ऐसे बच्चों को विद्यालय तक पहुंचाने में सहयोग की अपील की। जीवीएस से डॉक्टर विन्नी सुखीजा, प्रेम बंसल तथा अखिल भारतीय अंगवाल समेलन महिला इकाई से संगीता मंगला, उमा गोयल व वर्षा अंगवाल मौजूद रहे। संजय सिंगला ने बताया कि बच्चों द्वारा बनाई राखियां बाजार में रखी जाएंगी। इनसे प्राप्त राशि बच्चों की जरूरतों पर खर्च होगी।

गेटवे इंटरनेशनल स्कूल में शिक्षकों के पेशेवर विकास पर प्रशिक्षण कार्यक्रम



सोनीपत। गेटवे इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को शिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए एक दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में आमंत्रित विशेषज्ञ डॉ. किरण दलाल और स्वाती बालियान ने शिक्षकों के साथ शिक्षण से जुड़े महत्वपूर्ण विचार साझा किए। डॉ. किरण दलाल ने आधुनिक शिक्षण तकनीकों और सक्रिय शिक्षण के माध्यम से विषयों को सरल एवं प्रभावी ढंग से विद्यार्थियों तक पहुंचाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पक्ष में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाती है। वहीं स्वाती बालियान ने सकारात्मक कक्षा वातावरण, विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और समावेशी शिक्षा पर विचार दिये। उन्होंने शिक्षकों को विद्यार्थियों की भावनात्मक जरूरतों को समझने और सभी बच्चों को समान अवसर देने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने दोनों वक्ताओं का अमूल्य ज्ञान बताते हुए कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की कार्यकुशलता बढ़ाने में सहायक होते हैं। उपस्थित शिक्षकों ने कार्यक्रम को ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक बताया।

बाजू पर काले रिबन बांधकर छात्राओं को पढ़ाया

तेरह माह से वेतन नहीं मिलने पर महाविद्यालय स्टाफ का धरना

हरिभूमि न्यूज ►► खरखोदा

सावित्री बाई फुले राजकीय कन्या महाविद्यालय, खरखोदा के 75 कर्मचारियों ने 13 माह से वेतन नहीं मिलने और सेवा में समायोजन की प्रक्रिया लंबित होने के विरोध में शनिवार को कॉलेज गेट के बाहर सांकेतिक धरना दिया। धरने की अध्यक्षता प्रोफेसर योगिता ने की। इसमें परमवीर, वीरेंद्र, सुमित्रा, संदीप सहित अन्य कर्मचारी शामिल रहे। कर्मचारियों ने कक्षाओं में बाजू पर काले रिबन बांधकर छात्राओं को पढ़ाया और सरकार के प्रति रोष जताया। कर्मचारियों ने बताया कि 5 अगस्त 2025 को सावित्री बाई फुले राजकीय कन्या महाविद्यालय का सरकार द्वारा अधिग्रहण किए जाने के बाद उन्हें सरकारी सेवा में समायोजित किए जाने की प्रक्रिया शुरू की गई थी, लेकिन अभी तक मामला पूरा नहीं हो पाया है। कर्मचारियों का कहना है कि पिछले करीब 13 माह से वेतन नहीं मिलने के कारण उन्हें



खरखोदा। तहसीलदार को ज्ञापन देते महाविद्यालय कर्मचारी। फोटो: हरिभूमि

कर्मचारियों में रोष बढ़ रहा

ज्ञापन में कर्मचारियों ने कहा कि महाविद्यालय के सरकार द्वारा अधिग्रहण के बाद कर्मचारियों को उम्मीद थी कि उनकी सेवा एवं वेतन संबंधी समस्या का जल्द समाधान हो जाएगा, लेकिन लंबे समय से मामला लंबित होने के कारण कर्मचारियों में रोष बढ़ रहा है। कर्मचारियों ने बताया कि इस संबंध में वे मुख्यमंत्री और स्थानीय विधायक से भी कई बार मुलाकात कर अपनी समस्या से अवगत करा चुके हैं, लेकिन अभी तक कोई ठोस समाधान नहीं हुआ है।

आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। नियमित कर्मचारियों के दस्तावेजों का संबंधित विभाग द्वारा सत्यापन भी किया जा चुका है, इसके बावजूद वेतन जारी नहीं किया गया है।

धरने के दौरान कर्मचारियों ने अपनी मांगों को लेकर मुख्यमंत्री के नाम तहसीलदार बिजेन्द्र नंदल को ज्ञापन सौंपा। शनिवार को अवकाश होने के कारण तहसीलदार बिजेन्द्र नंदल कॉलेज

तहसीलदार ने आश्वासन दिया

कर्मचारियों ने तहसीलदार से कहा कि वे लंबे समय से शांतिपूर्ण तरीके से अपनी मांगों को उठा रहे हैं। अब यदि जल्द उनकी समस्या का समाधान नहीं किया गया और सरकार की ओर से कोई ठोस आश्वासन नहीं मिला तो अगले शनिवार से धरना लगातार जारी किया जाएगा। कर्मचारियों ने स्पष्ट किया कि उनका मुख्य उद्देश्य लंबित वेतन जारी करवाना और सेवा में समायोजन की प्रक्रिया को जल्द पूरा करवाना है। तहसीलदार बिजेन्द्र नंदल ने कर्मचारियों से बातचीत कर उनकी मांगों को सुना तथा उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया। आश्वासन के बाद कर्मचारी शांतिपूर्वक कॉलेज में चले गए।

में ही कर्मचारियों का ज्ञापन लेने पहुंचे। ज्ञापन में कर्मचारियों ने पिछले 13 माह का लंबित वेतन जल्द जारी करवाने, सभी कर्मचारियों की सेवा को सरकारी व्यवस्था में समायोजित करने की प्रक्रिया शीघ्र पूरी करवाने तथा भविष्य में वेतन नियमित रूप से जारी करने की मांग की।

रचनात्मक गतिविधियों से बच्चों ने प्रतिभा को निखारा



कुम्हार के पास मिट्टी के बर्तन बनाने की कला सीखते हुए नन्हे-मुन्ने विद्यार्थी।

■ कोशल विकास : नन्हे-मुन्ने बच्चों ने सीखी फैब्रिक पेंटिंग व कपड़ों का रखरखाव

अध्यक्षता प्राचार्या रेणु नासा ने की। कार्यक्रम की शुरुआत योग व ध्यान से हुई। योग व ध्यान से बच्चों ने शांति, एकाग्रता और सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि की। कक्षा पांचवीं व चौथी के विद्यार्थियों ने मिट्टी के बर्तन बनाना, फैब्रिक पेंटिंग तथा बेसिक स्टिचिंग सीखी। कक्षा तीसरी के विद्यार्थियों ने मिट्टी के बर्तन व फैब्रिक पेंटिंग के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को निखारा। कक्षा दूसरी व पहली के नन्हे विद्यार्थियों ने ओरिगेमी एक्विटिवि व कपड़ों का सही रख-रखाव (क्लॉथ मैनेजमेंट) बारे जानकारी प्राप्त की। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में रचनात्मक स्कूल के एमडी राजबीर राठी और विशिष्ट अतिथि स्कूल के प्रबंधक उत्तम राठी रहे। कार्यक्रम की

छात्राओं को किया एचपीवी वैक्सीनेशन के बारे में जागरूक



गोहाना। छात्राओं को वैक्सीनेशन के फायदे बताते हुए स्वास्थ्य विभाग की टीम।

हरिभूमि न्यूज ►► गोहाना

महम मार्ग स्थित जेकेआर पब्लिक स्कूल में शनिवार को एचपीवी वैक्सीनेशन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में नागरिक अस्पताल गोहाना से एलएमओ डॉ. छवि राठी, खंड स्वास्थ्य अधिकारी राजेश भारद्वाज, एमपीएचडब्ल्यू राजेश सिंह और दीपिका ने 9 से 14 वर्ष की आयु वर्ग के छात्राओं को जागरूक किया। डॉ. छवि राठी ने किशोरियों को एचपीवी से संबंधित समस्याओं के बारे में जागरूक किया और इस वैक्सीनेशन के फायदे समझाए। एचपीवी (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) वैक्सीन गर्भाशय-ग्रीवा सर्वाइकल कैंसर और एचपीवी से जुड़े अन्य गंभीर कैंसर को रोकने में मददगार है। यह टीका शरीर को मजबूत एंटीबॉडी बनाने में मदद करता है। डॉ. छवि ने छात्राओं को सुरक्षित भविष्य और स्वस्थ जीवन शैली का महत्व समझाया। कार्यक्रम में स्कूल के एमडी राजबीर राठी, प्रबंधक उत्तम राठी और मुख्य अध्यापिका संगीता मुंजाल उपस्थित रहे।

सेक्टर-12 के सामुदायिक केंद्र में लगाए पांच पौधे

सोनीपत। सेक्टर-12 स्थित सामुदायिक केंद्र में स्प्रेड स्माइल फाउंडेशन के संयोजक नितिन जैन के सान्निध्य में सावन मास के अवसर पर पांच पौधे लगाए गए। पर्यावरण प्रेमी दिलबाग सिंह ने कहा कि वर्षा ऋतु पौधारोपण के लिए उपयुक्त समय है। अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनकी नियमित देखभाल और सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए, तभी वे पेड़ बनकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान देंगे। पेड़ों से फल, लकड़ी, छाया, औषधि और शुद्ध ऑक्सीजन प्राप्त होती है। संस्था की ओर से लगाए गए पौधों की सुरक्षा और देखभाल सभी सदस्य मिलकर करते हैं। समय-समय पर पौधों में प्लांट बूस्टर दवा भी डाली जाएगी, ताकि उनका विकास तेजी से हो सके। पौधारोपण कार्यक्रम में रविकांत कौशिक, लक्ष्य, राजू, लेखराज, राकेश, उमेश कुमार, अप्रिंत सिंह आदि मौजूद रहे।



हरिद्वार में सोनीपत जोत महोत्सव में हुए विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम

पंजाबी समाज की आस्था का पर्व बन चुका जोत महोत्सव : राजीव जैन

■ जय हनुमान सेवा समिति की ओर से नंगली बेला आश्रम से शोभायात्रा निकाली गई

हरिभूमि न्यूज ►► सोनीपत

हरिद्वार में शनिवार को सोनीपत जोत महोत्सव के अवसर पर विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं की ओर से कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें मेयर नगर निगम राजीव जैन ने शिराकत की। उन्होंने कहा कि जोत महोत्सव धर्म एवं आस्था का प्रतीक है। राजीव जैन ने कहा कि सावन जोत



सोनीपत। हरिद्वार में आयोजित जोत महोत्सव में हिस्सा लेते हुए मेयर राजीव जैन।

महोत्सव की परंपरा भारत-पाकिस्तान विभाजन से पहले से चली आ रही है। उस समय मुलतान से श्रद्धालु जोत लेकर मां गंगा के चरणों में नदियों के रौद्र रूप

को शांत रखने और बाढ़ से बचाव की कामना के लिए आते थे। उन्होंने कहा कि पंजाबी समाज का यह पर्व आज 36 विरादरी की आस्था का पर्व बन चुका है और

» ये मौजूद रहे

कार्यक्रम में संजीव वलेजा, पुरुषोत्तम शर्मा, राजेंद्र गोयल, अशोक गर्ग, अमिल जैन, नवल विश्वोर, अमित जैन, महावीर, धर्मवीर, बिहारी अरोड़ा, महेंद्र सिंह, हरपाल सिंह, राम नारायण, राजेंद्र सिंह, राजेंद्र दहिया व कुलदीप खासा मौजूद रहे।

ऐसे आयोजन भाईचारे व प्रेम की भावना से मजबूत करते हैं। जय हनुमान सेवा समिति की ओर से नंगली बेला आश्रम से शोभायात्रा निकाली गई। इसमें हनुमान स्वरूप महाराज के साथ युवाओं ने जय श्रीराम के जयकारे लगाए।

खबर संक्षेप



भाषण और पोस्टर प्रतियोगिता में टीका राम गर्ल्स कॉलेज की छात्राओं ने जीते पुरस्कार

सोनीपत। टीका राम गर्ल्स कॉलेज, सोनीपत की छात्राओं ने 20 अगस्त को युवा कार्यक्रम के तहत राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, गन्नीर में आयोजित भाषण एवं पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में महाविद्यालय की छात्राओं ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए दो पुरस्कार अपने नाम किए। छात्रा प्रावी ने भाषण प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान हासिल कर नकद पुरस्कार प्राप्त किया। वहीं छात्रा मुस्कन ने पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त कर नकद पुरस्कार जीता। प्रतियोगिता में छात्राओं ने अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता का प्रदर्शन किया।

विद्यार्थियों ने संस्कृत भाषा पर पकड़ बनाई मजबूत

गोहाना। विद्या भारती हरियाणा के मार्गदर्शन में गीता विद्या मंदिर, गोहाना में 21 से 28 अगस्त तक संस्कृत सप्ताह आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से संस्कृत भाषा के गढ़ बनाने पर अपनी पकड़ मजबूत बनाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य अश्विनी कुमार ने की। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना तथा संस्कृत को सहज, सरल और व्यावहारिक रूप से सीखने के अवसर प्रदान करना है। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने नाटकम, गीतम, सुभाषितम, संवादम, समभाषणम, नृत्यम, स्वपरिचय तथा वस्तुनाम नामाभि जैसी गतिविधियों से अपनी प्रतीभा निखार रहे हैं। विद्यार्थियों ने संस्कृत में संवाद करना, श्लोक एवं सुभाषित प्रस्तुत करना सीखा।



सिकंदरपुर माजरा में होगा यज्ञ महोत्सव : पं. बिजेन्द्र

गोहाना। गांव सिकंदरपुर माजरा के बाबा राघव गिरी मंदिर में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ महोत्सव आयोजित होगा। श्रद्धालु यज्ञ में मंत्रोच्चारण के साथ आहुतियां डालकर विश्व शांति की कामना करेंगे। यज्ञ के पुरोहित पंडित विजेन्द्र आर्य के अनुसार 3 से 5 सितंबर तक प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक हवन तथा 10 से 11 बजे तक प्रवचन होगा। 6 सितंबर को प्रातः 8-30 से 9-30 बजे तक 11 कुंडिय महायज्ञ होगा और 9-30 से 10-30 बजे तक वैदिक सत्संग होगा। 10-30 से 11-30 बजे तक वैदिक प्रवचन और 11-30 बजे से 12 बजे तक सम्मान समारोह व भंडारा आयोजित होगा। इस अवसर पर राष्ट्रीय वैदिक परमार्थ ट्रस्ट के प्रेस सचिव आजाद सिंह दांगी के अलावा सरपंच प्रतिनिधि दर्शन सिंह शर्मा, नवीन गौड़, मास्टर चेतन शर्मा, रमेश शर्मा, अमित शर्मा, बलबीर शर्मा व डॉ. बंसी राम गौड़ विशेष रूप से मौजूद थे।



प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में सुन्दरम हाउस ने मारी बाजी

खरखोदा। कल्पना चावला विद्यापीठ में अंतर - सदनिय सामाजिक विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के तीनों सदनो उत्कृष्ट, शिवम और सुंदरम के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में सत्यम सदन को नॉर्थ स्टार, शिवम सदन को ईस्ट राइस और सुंदरम सदन को साउथ पल्स का नाम दिया गया। मंच संचालन अध्यापिका शीतल ने किया। प्रतियोगिता का अंतिम परिणाम ज्ञान और रोमांच से भरे इस कड़े मुकाबले में सुंदरम सदन की टीम 'साउथ पल्स' ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ प्रथम स्थान हासिल किया। वहीं सत्यम सदन की टीम 'नॉर्थ स्टार' ने शानदार मुकाबला करते हुए द्वितीय स्थान प्राप्त किया, जबकि शिवम सदन की टीम 'ईस्ट राइस' तृतीय स्थान पर रहा। प्राचार्य उषा वर्तस एवं प्राथमिक प्रमारी रितु ने विजेता एवं उप-विजेता टीमों को सम्मानित किया।

निबंध व पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिताओं में दिखाई प्रतिभा

गोहाना। गांव बड़ौता स्थित राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को साइंस और कम्प्यूटर सोसाइटी, भौतिक विज्ञान और महिला प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वाधान में निबंध-लेखन और पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। यह कार्यक्रम विश्व एडमिता पखवाड़ा और राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर प्रायोज्य प्रो. अनिल कुमार वोहरर की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। संयोजन प्रमारी डॉ. कुंदेश श्योरण और डॉ. शान देवी ने किया। डॉ. अमित राठी, डॉ. शान देवी और डॉ. राजेश डायर ने निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई। निबंध-लेखन में बीसीए तृतीय वर्ष की छात्रा कर्ति प्रथम, बीए द्वितीय वर्ष की छात्रा अनिता द्वितीय, बीएससी तृतीय वर्ष के आर्यन और बीए तृतीय वर्ष की छात्रा ममता तृतीय स्थान पर रहे। पोस्टर मेकिंग में कर्ति ने प्रथम, दिव्या ने द्वितीय और मन्ना ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर डॉ. प्रदीप कुंडू व आयोजक समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

मनजीत कुमार को मानद डॉक्टरेट से किया सम्मानित

सोनीपत। नई दिल्ली स्थित कस्टडीयूशन क्लब ऑफ इंडिया के डिप्टी स्पीकर हॉल में नवंबर घंटे पीएस फाउंडेशन की ओर से गौरव सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में देश के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली हस्तियों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि पूर्व सांसद एवं फिफम निर्माता सतीष भारतीया हैं। कार्यक्रम में मोनिका अरोरा, प्रवीण वीरभद्रया स्वामी, मंगेश नरसिंह धिवाटे, डॉ. सुरजि शर्मा और फाउंडेशन की डायरेक्टर प्रिया थरेजा सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे। समारोह में गांव खेवड़ा निवासी सोनीपत के समाजसेवी और तिरंगा वीर मनजीत कुमार आतिल को उनके सामाजिक कार्यों के लिए मानद डॉक्टरेट से सम्मानित किया गया।

एक पेड़—एक जिंदगी’ अभियान के तहत प्रताप स्कूल में पर्यावरण संरक्षण की पहल

खरखोदा। 'एक पेड़—एक जिंदगी' अभियान के तहत प्रताप सिंह मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, खरखोदा में पर्यावरण संरक्षण और हरियाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पौधा वितरण एवं पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान प्राचार्य दया दहिया ने विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के पौधों विवरित किए और उन्हें पौधों की नियमित देखभाल करने के लिए प्रेरित किया। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक पौधे प्राप्त किए तथा पर्यावरण को हरा-भरा बनाने का संकल्प लिया। प्राचार्य दया दहिया ने कहा कि 'एक पेड़—एक जिंदगी' केवल एक अभियान नहीं, बल्कि प्रकृति और आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी है।



खबर संक्षेप

मकान में तैयार हो रहे थे नकली हार्पिक, एक काबू

सोनीपत। गांव प्रीतमपुरा में एक मकान के अंदर नामी कंपनियों के नाम से नकली सफाई उत्पाद तैयार कर बाजार में बेचने का मामला सामने आया है। सूचना मिलने पर कुंडली थाना पुलिस ने मकान में छापे मारकर मौके से नकली हार्पिक, लाइजोल और कॉलिन की बड़ी खेप बरामद की। पुलिस ने मौके से अटेरना निवासी राजसिंह को गिरफ्तार किया है। तलाशी के दौरान तैयार उत्पादों के अलावा बड़ी संख्या में खाली बोतलें, स्टीकर, गत्ते की पेटियां, ढक्कन और नकली उत्पाद तैयार करने में इस्तेमाल होने वाली मशीनें बरामद हुई हैं। पुलिस ने विभिन्न उत्पादों के सात नमूने जांच के लिए लिए हैं। दिल्ली के मोतीनगर निवासी निशांत मल्होत्रा ने शुक्रवार रात कुंडली थाने में शिकायत देकर प्राथमिकी दर्ज कराई है।

खुबडू-नयाबांस संपर्क मार्ग हुआ तैयार

गन्नौर। खुबडू से नयाबांस को जोड़ने वाला 1.1 किलोमीटर लंबा संपर्क मार्ग बनकर तैयार हो गया है। मार्ग का निर्माण कार्य पूरा होने के बाद अब लोक निर्माण विभाग की ओर से अंतिम तैयारियां की जा रही हैं। सड़क पर सुरक्षा चिन्ह लगाने का काम शुरू कर दिया गया है। पहले यह मार्ग 12 फीट चौड़ा था। निर्माण के दौरान इसकी चौड़ाई बढ़ाकर 18 फीट कर दी गई है। इससे मार्ग पर वाहनों के आवागमन में सुविधा होगी और ग्रामीणों को आवाजाही के दौरान होने वाली परेशानी से राहत मिलेगी।

एचपीवी टीकाकरण को लेकर हुआ कार्यक्रम



खरखौदा। के.डी. इंटरनेशनल स्कूल में विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को ह्यूमन पैपिलोमावायरस (एचवीएन) टीकाकरण के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में दिल्ली स्थित अस्पताल, सेंट स्टीफंस, तीस हजारी से आए डॉ प्रॉंतिका ने विद्यार्थियों और अभिभावकों को एच पी वी संक्रमण, उससे बचाव तथा टीकाकरण के महत्व के बारे में जानकारी दी।

बीफार्मेसी की परीक्षा में फर्जी परीक्षार्थी बनकर पहुंचा युवक, केंद्र अधीक्षक ने पकड़ा

सोनीपत। मुखरथ स्थित आईआईटीएम कॉलेज में बीफार्मेसी की परीक्षा के दौरान एक युवक दूसरे परीक्षार्थी की जगह परीक्षा देने पहुंच गया। परीक्षा केंद्र पर तैनात केंद्र अधीक्षक को प्रवेश पत्र पर लगी तस्वीर और परीक्षा दे रहे युवक के चेहरे में अंतर नजर आया। संदेह होने पर उन्होंने युवक से पूछताछ की तो उसने अपना नाम अंकित बताया और धुत की जगह परीक्षा देने की बात स्वीकार कर ली। मामले की सूचना पुलिस को दी गई। डायल-112 की टीम मौके पर पहुंची और दोनों युवकों को पुलिस के हवाले कर दिया गया। मुखरथ थाना पुलिस ने केंद्र अधीक्षक की शिकायत पर दोनों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया। मलिक कॉलोनी निवासी पूजा ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उनकी ड्यूटी आईआईटीएम कॉलेज मुखरथ में बीफार्मेसी की परीक्षा के दौरान केंद्र अधीक्षक के तौर पर लगी हुई है। शुक्रवार को कॉलेज में परीक्षा चल रही थी। परीक्षा शुरू होने के बाद वह परीक्षार्थियों की निगरानी कर रही थीं।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 9653530209, 9253681005, 9253681010

मृत्यु अंत नहीं है

मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश

आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुगम हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 से.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/-
10X 8 से.मी		रु. 2500/-

+5% GST Extra

नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कोई रेट लागू।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

असुविधाओं के बीच चर्चित मुखरथ विवि फिर विवादों में घिरा

सहायक प्रोफेसर पर अभद्र व्यवहार का आरोप, बीसी कार्यालय के बाहर धरना जारी

छात्रों की मांग - जांच पूरी होने तक प्रोफेसर को कक्षाओं से दूर रखा जाए



सोनीपत। मुखरथ स्थित दीनबंधु छोट्ट राम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय।

शिकायत करने के बावजूद प्रबंधन उनकी सुनवाई नहीं कर रहे हैं। छात्रों की मांग है कि संबंधित सहायक प्रोफेसर को 8वें सेमेस्टर तक उनकी कक्षाएं न लेने की हिदायत दी जाए, साथ ही उन्हें परीक्षा में मार्किंग की जिम्मेदारी सौंपी जाए। छात्रों की प्रबंधन से मांग है कि सहायक प्रोफेसर के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाए, जांच होने तक उन्हें सस्पेंड किया जाए। छात्रों ने बताया कि शिकायत देने के बाद विवि में कुलपति की अध्यक्षता में बैठक हो चुकी है, लेकिन प्रबंधन ने उन्हें कार्रवाई के लिए कोई लिखित आश्वासन नहीं दिया है। वहीं सहायक प्रोफेसर पर लगे आरोपों का मामला अब छात्रों के अभिभावकों तक पहुंचने लगा है।

छात्राओं ने सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए राज्यपाल, कुलपति, रजिस्ट्रार को मेजी शिकायत

विवि की कुछ छात्राओं ने विश्वविद्यालय परिसर की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए राज्यपाल, कुलपति, रजिस्ट्रार को मेल के माध्यम से अपनी शिकायत मेजी है। छात्राओं का आरोप है कि इन दिनों विवि परिसर व छात्रावास के आसपास कुछ बाहरी एवं असामाजिक तत्वों की संदिग्ध आवाजाही देखने को मिल रही है। ऐसे में छात्राओं को अत्यवस्था का माहौल नजर आने लगा है। आरोप है कि छात्रावास के आसपास कुछ युवक वाहनों से चक्कर लगाते हैं, तेज आवाज में संगीत बजाते हैं। कई वाहनों पर ब्लैक फिल्म लगी होती है। कुछ वाहनों पर नंबर प्लेट स्पार्ट रूप से दिखाई नहीं देती। इससे छात्राओं को हॉस्टल से बाहर निकलने, परिसर में आवागमन करने में असुरक्षित महसूस हो रहा है। आरोप है कि युवक छात्राओं पर फबितियां कसते हैं और अश्लील एवं आपत्तिजनक टिप्पणियों की जाती हैं। ऐसे में विवि सुरक्षा व्यवस्था में तैनात होमगार्ड एवं अन्य सुरक्षा कर्मियों की भूमिका की भी जांच करवाई जाए। छात्रा का सवाल है कि बाहरी एवं संदिग्ध वाहनों, युवकों को विवि परिसर में किसके श्रेय पर प्रवेश मिल रहा है। छात्रा ने मांग की, कि विवि के छात्रावास के समक्ष व आसपास पुलिस व होमगार्ड नियुक्त किए जाए। नियमित पुलिस पैट्रोलिंग कराई जाए। संदिग्ध वाहनों के नंबर व सीसीटीवी फुटेज की जांच करवाई जाए।

छात्रों के समर्थन में आए कुछ अभिभावकों ने हिदायत दी है कि यदि मंगलवार तक सहायक प्रोफेसर पर नियमानुसार कार्रवाई नहीं हुई, तो अन्य अभिभावक भी छात्रों के हित में विश्वविद्यालय पहुंचेंगे। उनका कहना है कि विवि में पहले भी इस प्रकार की शिकायतें सामने आ चुकी है। ऐसे में जांच पूरी कर तथ्यों के आधार पर उचित कार्रवाई अमल में लाई जाए।

चाइल्ड केयर इंटरनेशनल स्कूल में विद्यार्थियों ने रोपे पौधे, हरियाली का लिया संकल्प



गन्नौर। चाइल्ड केयर इंटरनेशनल स्कूल में विशेष पौधारोपण अभियान में कक्षा छठी से दसवीं तक के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और विद्यालय परिसर में विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया और पौधारोपण के साथ-साथ उनके संरक्षण और नियमित देखभाल की जिम्मेदारी लेने का भी संकल्प लिया। विद्यालय के निदेशक अजय यादव ने विद्यार्थियों को पर्यावरण के महत्व के बारे में जानकारी देते हुए बताया गया कि पौधे केवल विद्यालय परिसर की सुंदरता बढ़ाने का माध्यम नहीं हैं, बल्कि स्वच्छ हवा, बेहतर पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य के लिए बेहद जरूरी हैं। आज लगाए गए पौधे आने वाले समय में हरियाली और स्वस्थ पर्यावरण की मजबूत नींव बनेंगे। अभियान के माध्यम से विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और सामाजिक जागरूकता की भावना विकसित हुई। कक्षा छठी के विद्यार्थियों ने आम, नीम, तुलसी, गुलाब और अमरुद के पौधे लगाए। कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों ने बरगद, पीपल, गुड़हल, अशोक और मेढा के पौधे रोपे। कक्षा नौवीं के विद्यार्थियों ने पाम, एलेवेरा, बॉय, जाजून और नींबू के पौधे लगाए। वहाँ कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों ने स्केट प्लांट, स्पाइडर प्लांट, लैवेंडर, कनी प्लांट, चमेली और ऑर्किड सहित विभिन्न पौधे रोपकर अभियान को आकर्षक बनाया। कार्यक्रम के दौरान स्कूल के शिक्षक भी मौजूद रहे।

गुरु रविदास की शिक्षाएं आज भी समाज के लिए मार्गदर्शक : देवेन्द्र



गन्नौर। गांव देवदू स्थित संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज के मंदिर में वाराणसी स्थित संत रविदास महाराज की जन्मस्थली से लाई गई पवित्र मिट्टी के कलश गन्नौर विधानसभा के विभिन्न गांवों के शक्ति केंद्र प्रमुखों को सौंपे गए। इन कलशों को विधानसभा क्षेत्र के गांवों में स्थित मंदिरों में स्थापित किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजपुर मंडल अध्यक्ष श्रवण कौशिक ने की। भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य एवं सोनीपत लोकसभा मन की बात कार्यक्रम के संयोजक आजाद सिंह नेहरा और गन्नौर से पूर्व प्रत्याशी देवेन्द्र कौशिक ने शक्ति केंद्र प्रमुखों को पवित्र मिट्टी के कलश सौंपे। देवेन्द्र कौशिक ने कहा कि संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज ने समाज को समानता, भाईचारे, शिक्षा और मानवता का संदेश दिया। उनकी शिक्षाएं आज भी समाज के लिए मार्गदर्शक हैं। कार्यक्रम में अमित सेनी, जिला संयोजक एवं एससी मोर्चा अध्यक्ष शमशेर तूफान, मंडल महामंत्री दीपक नेन, अमनदीप सिंह, अनिल जमदीन, शहजादपुर नवीन वशिष्ठ आदि मौजूद रहे।

नवीन बाल विकास विद्यालय में विद्यार्थियों को डीटीपी के टीके लगाए



गन्नौर। गांव मिगान स्थित स्वास्थ्य केंद्र की ओर से नवीन बाल विकास स्कूल में विद्यार्थियों के लिए डीटीपी टीकाकरण अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान स्वास्थ्य विभाग की टीम ने कक्षा पांचवीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों को टीके लगाए और उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया। टीकाकरण अभियान में मल्टीपर्पज हेल्थ वर्कर बिजेन्द्र और अनीता देवी ने विद्यार्थियों को टीके लगाए। स्वास्थ्य कर्मियों ने विद्यार्थियों को टीकाकरण के बारे में बताया कि समय पर टीके लगवाना विभिन्न बीमारियों से बचाव के लिए जरूरी है। हेल्थ वर्कर बिजेन्द्र ने विद्यार्थियों को टीकाकरण से संबंधित आवश्यक जानकारी दी गई। स्कूल में स्वास्थ्य विभाग की टीम पहुंचने पर विद्यालय के प्रधानाचार्य ओमप्रकाश त्यागी ने उनका स्वागत किया। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग की ओर से विद्यार्थियों के लिए चलाए गए टीकाकरण अभियान की सराहना करते हुए टीम का आभार जताया।अभियान के दौरान विद्यालय का स्टाफ भी मौजूद रहा।

देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता में विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने बिखेरी प्रतिभा

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ गन्नौर

भारत विकास परिषद वीर सावरकर शाखा की ओर से देवकुल शिक्षा सदन में देशभक्ति गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विभिन्न स्कूलों से पहुंचे 31 विद्यार्थियों ने भाग लेकर देशभक्ति गीतों की शानदार प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय संचालक अरुण त्यागी ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए किया। प्रतियोगिता स्थिति एवं वरिष्ठ दो वर्गों में आयोजित हुई। शाखा सचिव प्रीतम आहूजा और प्रवीण सिंघल ने मंच संचालन किया, जबकि मोहन शर्मा एवं पूर्व प्राचार्य



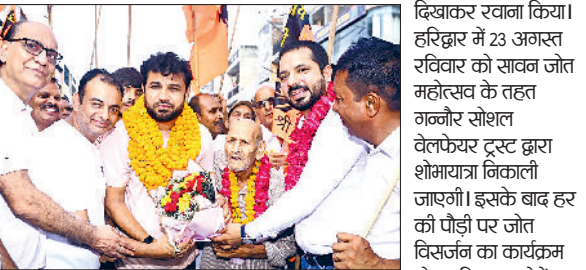
खेम करण शर्मा ने निर्णायक की भूमिका निभाई। कनिष्ठ वर्ग में लॉर्ड गणेशा विद्यापीठ की अंशिका ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। बीआर ग्लोबल स्कूल की अन्वी एवं गीता विद्या मंदिर की युक्ति संयुक्त रूप से द्वितीय रहीं। चाइल्ड केयर पब्लिक स्कूल की वंशिका एवं हैप्पी चाइल्ड हाई स्कूल की तनीषा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। संवेदिता, दीपशी, रूही और

अंशिका को सांत्वना पुरस्कार मिला। वरिष्ठ वर्ग में हैप्पी चाइल्ड हाई स्कूल की अपूर्वा प्रथम, हैप्पी चाइल्ड इंटरनेशनल स्कूल के आयुष गिरी द्वितीय और चाइल्ड केयर पब्लिक स्कूल की कशिश तृतीय स्थान पर रहीं। इस अवसर पर डॉ. अश्वनी, भारत भूषण भूटानी, पुनम सिंघल, अजय यादव, अरुण त्यागी, शुभलता त्यागी, न्यू विशा पाहुजा आदि रहे।

विधायक ने हरी झंडी दिखाकर 300

श्रद्धालुओं का जत्था हरिद्वार किया रवाना

गन्नौर। सावन जोत महोत्सव में शामिल होने के लिए शनिवार को गन्नौर से करीब 300 श्रद्धालुओं का जत्था हरिद्वार रवाना हुआ। भाजपा युवा मोर्चा के जिला सचिव अंकित मल्होत्रा के नेतृत्व में पांच बसों में श्रद्धालु गन्नौर रेलवे स्टेशन से रवाना हुए। बतौर मुख्यातिथि विधायक देवेन्द्र कादियान ने स्टेशन पहुंचकर जत्थे को हरी झंडी



दिखाकर रवाना किया। हरिद्वार में 23 अगस्त रविवार को सावन जोत महोत्सव के तहत गन्नौर सोशल वेलफेयर ट्रस्ट द्वारा शोभायात्रा निकाली जाएगी। इसके बाद हर की पौड़ी पर जोत विसर्जन का कार्यक्रम होगा। विधायक देवेन्द्र

प्रयास इंटरनेशनल स्कूल में छात्राओं व अभिभावकों को एचपीवी संक्रमण से बचाव के प्रति किया जागरूक

गन्नौर। प्रयास इंटरनेशनल स्कूल में छात्राओं एवं महिलाओं को एचपीवी (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) संक्रमण से बचाव और टीकाकरण के महत्व के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में



चिकित्सक डॉ. अमन ने महिलाओं और अभिभावकों को एचपीवी संक्रमण तथा इससे बचाव के लिए सरकार की ओर से चलाई जा रही मुहिम के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अभिभावकों एवं विद्यालय स्टाफ को एचपीवी टीकाकरण से संबंधित आवश्यक जानकारी दी गई। डॉ. अमन ने टीकाकरण के महत्व और स्वास्थ्य संबंधी मामों के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में विद्यालय की अध्यापिकाओं प्रीति और उषा की सक्रिय भागीदारी रही। विद्यालय की निदेशक डॉ. सुनीता जैन के मार्गदर्शन तथा प्रबंधक रुचिका बजा के विशेष सहयोग से कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। उपप्रधानाचार्या दीपमाला की मुख्य भूमिका रही। विद्यालय प्रबंधन ने अभिभावकों से अपील की कि वे अपनी बेटियों के स्वास्थ्य और सुरक्षित भविष्य के लिए एचपीवी टीकाकरण के प्रति जागरूक रहें, चिकित्सकीय जानकारी प्राप्त करें और विशेषज्ञ की सलाह के आधार पर उचित निर्णय लें।

मार्केट न्यूज़

फ़िम्स अस्पताल अपनी आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं तथा अनेक ख़ूबियों के चलते रोगियों के लिए वरदान

सोनीपत। फ़िम्स अस्पताल अपनी आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं तथा अनेक ख़ूबियों के चलते रोगियों के लिए वरदान तो है ही, इस परिसर में स्थित मंदिर भी अब रोगियों तथा उनके परिजनों के लिए अपार श्रद्धा तथा गहरी आस्था का केन्द्र बन गया है। 20 वर्षीय युवा बेटे राहुल यादव को अचेत अवस्था में यहाँ लेकर आने वाले उसके पिता विजय सिंह यादव तथा माता बिमली देवी का कहना है कि फ़िम्स अस्पताल हमारे लिए भगवान से कम नहीं है। हमारा बेटा राहुल जिला की एक कंपनी की छत के निर्माण के दौरान डैचार्ज से गिरने के कारण उसके सिर में चोट आने से अचेत हो गया था। कंपनी ने भी मानवता का परिचय देते हुए तन-मन-धन से हमारा पूरा साथ दिया, आज हमारा बेटा पूर्णतः स्वस्थ होकर हमारे साथ वापिस घर जा रहा है। इसका श्रेय फ़िम्स के कुशल प्रबंधन के साथ-साथ न्यूरो सर्जन-डा.अमित दहिया को जाता है, जिनकी बदीलत हमारे बेटे को नया जीवन मिला है। ये हम सब परिवार वालों के लिए बेहद खुशी का अवसर है। जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है। इसी मन्मत के पूरे होने पर रोगी के चाचा-चाची , मामा-मामी, फूफा-फूफी, भाई व बहनों आदि सहित लगभग दो दर्जन परिवारजन इस पूजा-अर्चना व प्रसाद वितरण के समय उपस्थित थे।



सोनीपत की सबसे बड़ी व अनुभवी ICU - क्रिटिकल केयर टीम



उपलब्ध उपचार

- अस्थमा
- सीओपीडी/एलआरटीआई
- हार्ट अटैक
- कार्डियक अरेस्ट
- सीकेडी/एकेआई
- किडनी फेलियर
- ब्रेन स्ट्रोक
- सिर की चोट
- रीढ़ की हड्डी की चोट
- ट्रॉमा/आरटीए
- ज़हर खाया हुआ
- साँप का काटना
- आंत से खून आना
- क्रॉनिक लिवर बीमारी
- लिवर फेलियर
- हेपेटो-रीनल सिंड्रोम
- कैसर
- गंभीर संक्रमण/सेप्टिक शॉक
- कई अंगों का खराब होना
- हेमरेज
- व अन्य बीमारियाँ

मुख्य विशेषताएँ

- सभी विशेषताओं के स्थायी विशेषज्ञ
- उन्नत इन-हाउस जाँच सुविधाएँ – एमआरआई, सीटी आदि
- सोनीपत का पहला प्रिंसीजन मेडिसिन आईसीयू
- सबसे उन्नत चिकित्सा उपकरण
- सोनीपत का पहला एवं एकमात्र प्रमाणित टीचिंग आईसीयू
- 24x7 ब्लड बैंक एवं पैथोलॉजी सेवाएँ

FIMS HOSPITAL

Bahalgarh-Sonipat Road, Sonipat, Haryana

www.fimssonipat.com

0130-2205000

Follow us:

"On panel of CGHS, Haryana Govt., ESIC, ECHS, Delhi Gov, Railway, NDMC, DJB, FCI, MCD, AAI, DTL, DTC, TPDDL, Raksha, Star, and all Major Insurance Companies, TPAs, & PSUs."

आपसी संवाद का बदलता मिजाज खो ना जाए रिश्तों की मिठास



कवर स्टोरी
रशीधरा भटनागर

भाषा केवल बोलने का माध्यम नहीं, मनुष्य के भीतर से दूसरे मनुष्य तक जाने वाली वह महीन डोर है, जिसमें समय, संस्कार, स्मृतियाँ और संबंध एक साथ बंधे रहते हैं। किसी समाज की भाषा को सुनकर उसके समय की धड़कन पहचानी जा सकती है। शब्द बदलते हैं तो केवल शब्द नहीं बदलते, उनके साथ हमारे व्यवहार, हमारी निकटताएँ और कभी-कभी हमारी संवेदनाएँ भी अपना रूप बदल लेती हैं।

भाषा में होता था माधुर्य

एक समय था, जब मोहल्ला एक परिवार जैसा होता था और मोहल्ले की अपनी एक लोकभाषा हुआ करती थी। वह किसी व्याकरण की पुस्तक में नहीं मिलती थी, फिर भी उसमें जीवन का पूरा व्याकरण समाया होता था। पड़ोस की चाची, गली के काका, सामने वाले घर की दादी, दूध वाले भैया, डाकिया चाचा। रक्त-संबंध न होते हुए भी भाषा ने सबको रिश्तों में बांध रखा था। किसी के घर से पकवान निकला तो कटोरी पड़ोस में पहुँची। किसी के यहां कोई दुःख-परेशानी आई तो अगले बरताने से आवाज आती, 'कुछ चाहिए तो बताना।' किसी बुजुर्ग को देखते ही बच्चे का स्वर अपने आप नीचे हो जाता था। 'आप', 'आइए', 'बैठिए', 'खाइए', 'कैसे हैं?... ' ये केवल शब्द नहीं बल्कि बुझने के अस्तित्व को स्वीकार करने के संस्कार हुआ करते थे। मोहल्ले की उस भाषा में एक सहज माधुर्य था। उसमें आत्मीयता थी, पर आत्मीयता की भी एक मर्यादा थी। मजाक था, मगर अपमान नहीं। असहमति थी,

मगर संबोधन में सम्मान बचा रहता था। आज मोहल्ले सिकुड़कर अपार्टमेंट हो गए हैं और चौपाल स्क्रीन पर चली गई है। पड़ोसी का चेहरा कई बार वर्षों तक दिखाई नहीं देता, जबकि दूर देश में रहने वाला कोई डिजिटल मित्र प्रतिदिन बातचीत का हिस्सा बना रहता है। भाषा भी उसी के साथ बदल गई है।

नई पीढ़ी की बेलाग भाषा

आज जब हम नई पीढ़ी की भाषा की बात करते हैं, तो चर्चा केवल 'हाय', 'हेलो' 'ओके', 'कूल' 'ब्रो' या डिजिटल संक्षिप्तियों तक सीमित नहीं रह सकती है। इस भाषा का एक दूसरा, अधिक चिंताजनक पक्ष है बातचीत में बढ़ती बेलाग अशिष्टता, गाली-गलौज और अपशब्दों का सहज इस्तेमाल।

लेकिन इसे केवल 'आज के बच्चों के संस्कार खराब हैं' कहकर समझ लेना समस्या को बहुत छोटा कर देना होगा। आज युवाओं की



बातचीत में अपशब्दों का इस्तेमाल कई संदर्भों में सामान्य होता दिखाई देता है। शोध यह संकेत देते हैं कि युवाओं में अपशब्दों का प्रयोग केवल 'असंस्कारी' होने का परिणाम नहीं होता। कभी यह भावनाओं को तीव्रता से व्यक्त करने, कभी समूह में स्वीकार्यता पाने और कभी अपनी बात

घर-परिवार हो, पड़ोसी, मित्र-मंडली, सहकर्मी हों या रिश्तेदार, सभी से संबंध, हमारे बातचीत के तरीके और शब्दों पर निर्भर करते हैं। समय के साथ शब्द, संबोधन, भाषा की चाल बदलना स्वाभाविक है, लेकिन भाषा से यदि सम्मान और मर्यादा का भाव कम होने लगे तो रिश्तों की ऊष्मा, उसकी मिठास खोने का डर मंडराने लगता है। ऐसे में हम सभी को सजग होने की जरूरत है।



को अधिक प्रभावशाली बनाने का माध्यम बन जाता है। सोशल मीडिया ने युवाओं को अपनी बात खुलकर रखने के बहुत अधिक अवसर दिए हैं और इसके साथ अशिष्ट भाषा की दुर्यता भी बढ़ी है। यानी समस्या केवल शब्दों की नहीं, शब्दों के सामान्य हो जाने की है। दरअसल, जब किसी शब्द को बार-बार सुना जाता है, तो उसका चौंकाने वाला प्रभाव कम होने लगता है। जो कल असभ्य माना जाता था, वह आज मजाक का हिस्सा बन जाता है। और जो मजाक में कहा गया था, वह धीरे-धीरे रोजमर्रा की भाषा में प्रवेश कर जाता है।

समझना होगा महत्वपूर्ण अंतर

हर अपशब्द हिंसा नहीं है और हर अपशब्द किसी व्यक्ति को अपमानित करने के लिए नहीं बोला जाता। भाषा-विज्ञान और मनोविज्ञान के अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि लोग कभी-कभी ऐसे शब्दों का इस्तेमाल भावनात्मक तीव्रता, तनाव या आश्चर्य व्यक्त करने के लिए करते हैं। लेकिन किसी की



गरिमा को चोट पहुंचाने वाली गाली और मित्रों के बीच भावनात्मक विस्मय व्यक्त करने वाला अपशब्द एक ही बात नहीं हैं। यहीं भाषा की नैतिकता का प्रश्न खड़ा होता है। आखिर यह भाषा आई कहां से? इस बदलाव के पीछे कई परतें हैं।

डिजिटल दुनिया: सोशल मीडिया, ऑनलाइन गेमिंग, छोटे वीडियो और मीम संस्कृति में तीखी, उत्तेजक और चौंकाने वाली भाषा अकसर मनोरंजन का हिस्सा बन जाती है।

साधियों का प्रभाव: किशोरावस्था में समूह से जुड़ना बहुत महत्वपूर्ण होता है। कोई शब्द मित्र-मंडली में सामान्य है तो उसे न बोलना कई बार 'अलग' दिखाई देना हो सकता है। इसलिए युवा भाषा केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं, समूह की पहचान भी बन जाती है।

घर की भाषा: हम अकसर बच्चों की भाषा पर अंगुली उठाते हैं, लेकिन यह भूल जाते हैं कि भाषा सीखने की पहली पाठशाला घर है। यदि घर में क्रोध का पहला उतर गाली है, तो बच्चे के लिए गाली केवल निषिद्ध नहीं, समूह की पहचान भी बन जाती है।

शब्द नहीं रह जाती, वह क्रोध व्यक्त करने का सीखा हुआ तरीका बन सकती है। **ध्यान रखने की प्रवृत्ति:** बेलाग भाषा कई बार 'कूल', 'बोल्ड' या 'बेबाक' दिखने का माध्यम बन जाती है। इसीलिए कुछ युवा जान-बूझकर ऐसी भाषा चुनते हैं। **संवाद का घटता धैर्य:** जब बातचीत छोटी होती जाती है, तो भाव व्यक्त करने के लिए शब्दों की जगह तीव्र शब्द लेने लगते हैं। इन सभी कारणों को समझने के बाद विकृत होती भाषा के लिए केवल नई पीढ़ी को दोष देना उचित नहीं होगा, क्योंकि भाषा का यह परिवर्तन केवल युवाओं ने पैदा नहीं किया है। उन्हें यह भाषा समाज ने दी है।

भाषा में बनी रहे मधुरता-मर्यादा

हमें पुरानी भाषा को हूबहू वापस लाने की आवश्यकता नहीं है। नई पीढ़ी को अपनी भाषा होगी ही। जरूरत केवल इतनी है कि आधुनिकता के साथ माधुर्य भी रहे और बेबाकी के साथ मर्यादा भी। प्रश्न शब्द का नहीं, उसके पीछे मौजूद मन का है। हम न भूलें कि शब्दों में अद्भुत शक्ति होती है। वे रिश्तों में मिठास घोल सकते हैं तो हमेशा के लिए खटास भी भर सकते हैं। *

मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाएं भाई-बहन का भावनात्मक संबल

हर परिवार में भाई-बहन का रिश्ता सबसे अनोखा और प्यारा होता है। उम्र के हर दौर में भाई-बहन का एक-दूसरे को दिया जाने वाला भावनात्मक संबल, मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में भी बड़ी भूमिका निभाता है। इस बारे में आप विस्तार से जरूर जानना चाहेंगे।

पॉजिटिव इफेक्ट नैसी गुप्ता

बदली जीवनशैली, बढ़ता काम का दबाव, सोशल मीडिया की तुलना और अकेलेपन की भावना आज मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारण बन चुके हैं। ऐसे समय में परिवार का भावनात्मक सहयोग, हर व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी ताकत साबित होता है। परिवार में भाई-बहन का रिश्ता सबसे अलग और प्यारा होता है, क्योंकि यह केवल बचपन की यादों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि जीवन के हर पड़ाव पर भावनात्मक सुरक्षा, भरोसा और अपनापन भी देता है। भाई-बहन का रिश्ता दोनों के मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भावनात्मक सुरक्षा: बचपन के बाद टीनएज, यंगएज और मिडएज में भाई-बहन दोस्त जैसे हो जाते हैं, जिससे वे बिना किसी झिझक के अपनी भावनाएं साझा कर लेते हैं। जब जीवन में तनाव, असफलता या किसी तरह की परेशानी आती है, तो भरोसेमंद भाई या बहन का साथ मानसिक बोझ को काफी हद तक कम कर देता है। यह भावनात्मक सुरक्षा, चिंता और अकेलेपन की भावना को घटाने में मदद करती है।

तनाव होता है कम: मानसिक तनाव के दौरान किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात करना काफी राहत देता है। भाई-बहन एक-दूसरे की परिस्थितियों, स्वभाव और पारिवारिक पृष्ठभूमि को अच्छी तरह समझते हैं। इसलिए वे बिना जज किए सुनते हैं और व्यावहारिक सलाह भी देते हैं। यह सहयोग तनाव से बाहर निकलने में सहायक हो सकता है। **अकेलापन महसूस हो कम:** आज के समय में अनेक युवक-युवतियां, परिवार से दूर रहकर पढ़ाई



या नौकरी करते हैं। ऐसे में अकेलेपन की समस्या बढ़ सकती है। ऐसे में यदि भाई-बहन के साथ नियमित बातचीत होती रहे, तो दूरी के बावजूद भावनात्मक जुड़ाव कायम रहता है। फोन कॉल, वीडियो कॉल या संदेश भी मानसिक सुकून देने का काम करते हैं। **बढ़ता है आत्मविश्वास:** हर व्यक्ति के जीवन में ऐसे पल आते हैं जब उसे अपनी क्षमता पर संदेह होने लगता है। ऐसे समय में भाई या बहन का प्रोत्साहन आत्मविश्वास को दोबारा मजबूत कर सकता है। बचपन से एक-दूसरे की खूबियाँ और कमजोरियों को जानने के कारण, उनका उत्साहवर्धन अधिक प्रभावी महसूस होता है।

कठिन समय में सहारा: मानसिक स्वास्थ्य केवल भावनाओं तक सीमित नहीं है। बीमारी, आर्थिक परेशानी या पारिवारिक संकट के समय भाई-बहन, भावनात्मक समर्थन के साथ-साथ व्यावहारिक

मदद भी करते हैं। जिम्मेदारियां बांटना, निर्णय लेने में साथ देना और समस्याओं का समाधान ढूंढना मानसिक दबाव को कम करने में मदद करता है। **मिलती है सकारात्मक ऊर्जा:** बचपन की सुखद यादें मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। भाई-बहन के साथ बिताए गए खेल, त्योहार, शरारतें और पारिवारिक अनुभव कठिन समय में भी व्यक्ति को भावनात्मक रूप से मजबूत महसूस कराते हैं। कहा जा सकता है कि भाई-बहन का रिश्ता केवल खून का रिश्ता नहीं, बल्कि जीवन भर साथ रहने वाला भावनात्मक सहारा भी है। बदलते समय में जब मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियां लगातार बढ़ रही हैं, तब यह रिश्ता हमें अपनापन और आत्मविश्वास देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। * (क्लिनिकल साइकोलाजिस्ट निर्मल वर्मा से बातचीत पर आधारित)

रिश्ता बनाए रखें मजबूत

भाई-बहन के बीच केवल रिश्ता होना ही पर्याप्त नहीं होता है, बल्कि मजबूती बनाए रखने के लिए उसे समय देना भी जरूरी है। व्यस्त दिनचर्या के बावजूद नियमित बातचीत करें, एक-दूसरे की उपलब्धियों की सराहना करें, मतभेद होने पर संवाद बनाए रखें और छोटी-छोटी बातों को लंबे समय तक मन में न रखें। स्वस्थ संवाद रिश्ते को मजबूत बनाता है और मानसिक संतुलन बनाए रखने में भी मदद करता है। इसके साथ ही रक्षाबंधन, जन्मदिन या परिवार के छोटे-छोटे समारोह, भाई-बहन को फिर से करीब लाने का अवसर देते हैं। ऐसे अवसरों को मिस न करें। इस दौरान साथ समय बिताना, पुरानी यादें साझा करना, उत्साह के पल बिताना और एक-दूसरे का हाल-चाल जानना भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत करता है। कई परिवारों में भाई-बहनों के बीच तुलना की जाती है, जिससे तनाव, ईर्ष्या और आत्मसमझन से जुड़ी समस्याएं पैदा हो सकती हैं। इसके बजाय एक-दूसरे की सफलता का सम्मान करना और शुभिकल समय में सहयोग देना रिश्ते को अधिक सकारात्मक बनाता है। भाई-बहन के बीच रखे संबंध मानसिक स्वास्थ्य के लिए हमेशा लाभदायक होते हैं।



गजल
ओम निश्चल

राखी आ गई

फिर उमड़ आई बरन की याद राखी आ गई
फिर से पकवानों में आया स्वाद राखी आ गई

थाल में कुमकुम और रोली सज गई
हृदय में उठ रहा है आह्लाद राखी आ गई

गुनगुनाने-सा लगा है फिर ये घर
फिर हुआ है नायक आबाद राखी आ गई

चैनलों पर गीत गाए जा रहे
छंट गया है जेलन से श्रवसाद राखी आ गई

बंध गई हैं राखियां फिर हाथ में
बरन-भाई कर रहे संवाद राखी आ गई

एक धागे में जो चाहे बांध लो
भाईघरे का यही मरजाद राखी आ गई

लघुकथाएं

शदी के कुछ दिन बाद ही विदेश जा बसी बहू ने, सुबह-सुबह फोन की घंटी बजते ही अनमने मन से अपनी सास का कॉल रिसीव किया, बोली, 'प्रणाम मां जी, कैसी हैं आप?' सासू मां बोलीं, 'अरे बहू, रक्षाबंधन पर अपने भाई की राखी भेजना मत भूलना। शदी के बाद पहली राखी है, तुम्हारे घर पर सब इंतजार करेगे।' 'जी मां जी, भेज दूंगी, आप चिंता ना करें।' उसने सधी-सपाट आवाज में जवाब दिया और फोन रखते ही सोचने लगी, 'फोन, चैट, वाट्सएप सब तो चलता ही रहता है, मैं कौन-सी भाई से साल में एक बार मिलती हूं? इस साल ही तो दूर आई हूं। राखी भेजने की औपचारिकता करना ही क्या जरूरी है?' बाद में वह घर-ऑफिस के कामों में ऐसा उलझी कि यह भूल ही गई रक्षाबंधन है कब? रक्षाबंधन के दिन सुबह-सुबह भाई ने अपनी कलाई पर सजी सुंदर राखी की फोटो भेजी और एक प्यारा-सा संदेश भी। 'कितना खुश हूं मैं कि वहां जाकर भी तुम्हें राखी का त्योहार याद रहा, अपने भाई के लिए स्नेह की डोर भेजना न भूलो। देख तो दूर रहकर भी हमारे बीच कभी दूरियां नहीं आएंगी। यह रेशमी धागा हमें हमेशा बांधे रखेगा।' फिर फोन पर बात हुई तो भाई-बहन दोनों का गला रंध गया। आंखों में नमी लिए खुशी से कांपते हाथों से उसने सासू मां को फोन लगाया तो उन्होंने

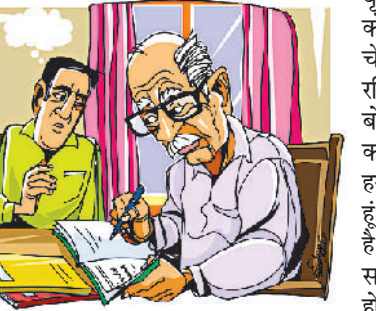
वृद्धाश्रम में रहने वाले एक बुजुर्ग रोज सुबह सबसे पहले वहां का उपस्थिति रजिस्टर खोलते और कांपते हाथों से अपने नाम के सामने हस्ताक्षर करते थे। एक दिन वहां मौजूद एक स्वयंसेवक ने उत्सुकता से पूछा, 'अंकलजी, यहां तो कोई रोज जांच भी नहीं करता, फिर आप हर दिन रजिस्टर में हस्ताक्षर क्यों करते हैं?' बुजुर्ग हल्का-सा मुस्कुराए और बोले, 'आदत है बेटा बरसों पुरानी आदत।' कुछ पल चुप रहने के बाद उनकी आंखें कहीं दूर टिक गईं, फिर धीमे स्वर में बोले, 'पूरी जिंदगी बैंक के कागजों पर, जमीन के दस्तावेजों पर, मकान के रजिस्ट्री पेपर्स पर, न जाने कितनी बार हस्ताक्षर करता आता। हर हस्ताक्षर किसी न किसी जिम्मेदारी या अधिकार का प्रतीक था। लेकिन जिस दिन आखिरी

कच्ची डोर



चहकते हुए पूछा, 'राखी बांध ली भाई ने?' 'जी मां जी, पर...' बहू आगे कुछ पूछती, उधर से सास बोली, 'अरे बहू, राखी मैंने भेजी थी। चार दिन पहले ही राजेश ने बताया कि तुम राखी नहीं भेज पाई हो।' कुछ ठहरकर उन्होंने फिर कहा, 'बहू, कच्ची डोर से बंधे रिश्ते भी टूटते नहीं, बस यह डोर कच्ची ना पड़े, इतना ख्याल रखना जरूरी होता है।' *

हस्ताक्षर



बार समझा- सबसे कठिन हस्ताक्षर वे नहीं होते जो संपत्ति बांटते हैं, बल्कि वे होते हैं, जो हर दिन खुद के अस्तित्व का प्रमाण देते हैं। *

कृति आर.के. जैन

समाप्त होता जा रहा है। करुणा वही परिवर्तनकारी शक्ति है, जो हमें इन समस्याओं से उबार सकती है। किताब में करुणा की नई परिभाषा से हम रूबरू होते हैं। करुणा कोई मामूली भावना नहीं बल्कि हमें बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान तक पहुंचाने वाली ताकत है। न्याय की आत्मा है, बुद्धि का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। लेखक ने करुणा के इतने आयामों से हमारा परिचय कराया है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। किस तरह जीवन के हर क्षेत्र में करुणा को लागू कर हम एक खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं? किस तरह करुणा को मापा जा सकता है और किस तरह इसे अपने भीतर बढ़ाया भी जा सकता है? कुल मिलाकर करुणा में एक बेहतर दुनिया के निर्माण की शक्ति निहित है। *

किताब: करुणा-समाधान की शक्ति, लेखक: कैलाश सत्यार्थी, अनुवाद: आशुतोष गर्ग, मूल्य: 399 रुपए, प्रकाशक: हार्पर हिंदी, गुप्तग्राम

कच्ची डोर



चहकते हुए पूछा, 'राखी बांध ली भाई ने?' 'जी मां जी, पर...' बहू आगे कुछ पूछती, उधर से सास बोली, 'अरे बहू, राखी मैंने भेजी थी। चार दिन पहले ही राजेश ने बताया कि तुम राखी नहीं भेज पाई हो।' कुछ ठहरकर उन्होंने फिर कहा, 'बहू, कच्ची डोर से बंधे रिश्ते भी टूटते नहीं, बस यह डोर कच्ची ना पड़े, इतना ख्याल रखना जरूरी होता है।' *

हस्ताक्षर



बार समझा- सबसे कठिन हस्ताक्षर वे नहीं होते जो संपत्ति बांटते हैं, बल्कि वे होते हैं, जो हर दिन खुद के अस्तित्व का प्रमाण देते हैं। *

कृति आर.के. जैन

समाप्त होता जा रहा है। करुणा वही परिवर्तनकारी शक्ति है, जो हमें इन समस्याओं से उबार सकती है। किताब में करुणा की नई परिभाषा से हम रूबरू होते हैं। करुणा कोई मामूली भावना नहीं बल्कि हमें बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान तक पहुंचाने वाली ताकत है। न्याय की आत्मा है, बुद्धि का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। लेखक ने करुणा के इतने आयामों से हमारा परिचय कराया है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। किस तरह जीवन के हर क्षेत्र में करुणा को लागू कर हम एक खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं? किस तरह करुणा को मापा जा सकता है और किस तरह इसे अपने भीतर बढ़ाया भी जा सकता है? कुल मिलाकर करुणा में एक बेहतर दुनिया के निर्माण की शक्ति निहित है। *

किताब: करुणा-समाधान की शक्ति, लेखक: कैलाश सत्यार्थी, अनुवाद: आशुतोष गर्ग, मूल्य: 399 रुपए, प्रकाशक: हार्पर हिंदी, गुप्तग्राम

देश के कोने-कोने का भरोसा

2 करोड़+ मंशरूम पाउडर

आपके नज़दीकी सभी मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
Availability at: www.mynushroomworld.com
Amazon | Flipkart

वज़न बढ़ाने में सहायक

मशरूम एवं 12+ जड़ी-बूटियाँ

10 दिनों में अस्तर देखें

क्योंकि वज़न है, तो वज़नवारी है!

Mushroom World Ayurved & Food Pvt. Ltd. For Trade Enquiry + 91 888 922 3333

धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सव

केरल का बहुरंगी महापर्व ओणम

फूलों की रंगोलियों से सजे आंगन, सर्प नौकाओं की रोमांचक दौड़, लोकनृत्यों की थिरकन और केले के पते पर परोसा गया ओणसदा। ओणम में केरल की संस्कृति अपने सबसे जीवंत रूप में नजर आती है। राजा बलि की पौराणिक गाथा से जुड़ा यह पर्व आस्था, प्रकृति से जुड़ाव, परंपरा, सामाजिक समरसता और पारिवारिक एकता का अद्भुत संगम है। विगत सप्ताह आरंभ हो चुके इस सांस्कृतिक उत्सव की विशिष्टताओं पर एक नजर।

पर्वाँल्लास / धीरज बसाक

यदि उत्तर भारत में होली, रंगों का उत्सव है, पश्चिम भारत में गुजरात का नवरात्र लोकनृत्यों का उत्सव है और पश्चिम बंगाल की दुर्गा पूजा आस्था का विराट आयोजन है, तो कह सकते हैं

इन सभी रंगों और उत्सवों के महासंगम जैसा है-ओणम। दस दिनों तक मनाए जाने वाले इस पर्व के दौरान पूरा केरल मानो एक विशाल सांस्कृतिक रंगमंच में बदल जाता है- जहां फूलों की रंगोलियां (पुक्कलम), सर्प नौकाओं की रोमांचक दौड़, कथकली और पुलिकली जैसे लोकनृत्य, पारंपरिक संगीत, सामूहिक भोज (ओणसदा) तथा महाबलि की लोकगाथा, ये सब मिलकर एक अद्भुत उत्सवी वातावरण रचते हैं। दस दिनों तक मनाए जाने वाले ओणम का अंतिम उत्सव दिन इस साल 26 अगस्त को संपन्न होगा।

भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान: ओणम केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है बल्कि यह केरल की लोककला, सामाजिक समरसता, पारिवारिक एकता और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का महा उत्सव भी है। शायद यही कारण है कि ओणम आज केरल की सीमाओं से निकलकर भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान का हिस्सा हो चुका है, जहां उत्सव केवल मनाया नहीं जाता बल्कि जीवन का हिस्सा बन जाता है।

पर्व मनाने की पौराणिक मान्यता: पौराणिक मान्यता के अनुसार एक समय में केरल में राजा महाबलि का शासन हुआ करता था। महाबलि बेहद न्यायप्रिय, दयालु और प्रजावत्सल शासक थे। कहा जाता है कि उनके राज्य में कोई गरीब नहीं था। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होता था और सभी लोग सुखी थे। देवताओं के आग्रह पर भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण कर महाबलि की दयालुता और दानवीरता की परीक्षा लेने



पारंपरिक वेशभूषा में ओणम मनाते स्थानीय कलाकार

हेतु तीन पग भूमि मांगी। जब महाबलि ने कहा आप नाप लें, तो वामन के अवतार में भगवान विष्णु ने दो पगों में पृथ्वी और आकाश को नाप लिया और अब तीसरे पग के लिए कहीं कोई जगह नहीं थी, तो महाबलि ने अपना सिर प्रस्तुत कर दिया। इस पर भगवान विष्णु ने बलि की भक्ति और त्याग से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया कि वह वर्ष में एक बार अपनी प्रजा से मिलने आया करेंगे। वास्तव में ओणम का उत्सव उनके आगमन की खुशी का उत्सव है। यह पौराणिक कथा केवल धार्मिक आस्था की नहीं बल्कि आदर्श शासन-व्यवस्था, समानता, न्यायप्रियता, त्याग और जनकल्याण का संदेश देती है।

हर दिन होता है कुछ खास: ओणम की शुरुआत में सबसे पहले घरों के आंगन में फूलों की



ओणम की सांस्कृतिक पहचान है सर्प नौका दौड़

रंगोलियां बनाई जाती हैं। प्रत्येक दिन रंग-बिरंगे फूलों से सजने वाली यह रंगोली प्रकृति के प्रति प्रेम और सौंदर्यबोध का प्रतीक है। फूलों की इन रंगोलियों को यहां की स्थानीय भाषा में पुक्कलम कहा जाता है। ओणम के दौरान पारंपरिक नृत्य तिरुवात्तराकली, कुम्माट्टिकली, पुलिकली (बाघ नृत्य) और कथकली की प्रस्तुतियां पूरे राज्य में आकर्षण का केंद्र बनती हैं। लोकगीतों की मधुर धुनों और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की गूंज से इस दौरान केरल के गांव और शहर झूम उठते हैं। इसी समय होने वाली केरल की प्रसिद्ध वल्लमकली (सर्प नौका दौड़) तो विश्व भर में ओणम की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन चुकी है। इन लंबी-लंबी नौकाओं के अगले सिरे सांप के फन जैसे होते हैं। इनमें सैकड़ों नाविक एक साथ पूरे तालमेल

के साथ चप्पू चलाते हैं। यह केवल प्रतियोगिता नहीं है बल्कि सामूहिकता, अनुशासन और टीम भावना का प्रदर्शन है।

धार्मिक-सामाजिक समभाव का पर्व: ओणम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी एक धर्म या एक समुदाय का पर्व नहीं है। केरल में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई और अन्य समुदाय के लोग भी इसे पूरे सम्मान और उत्साह से मनाते हैं। ओणम का महत्वपूर्ण सामाजिक पक्ष यह है कि यह वर्ग, जाति और धर्म की सीमाओं को पीछे छोड़कर लोगों को एक सूत्र में बांधता है। दस दिनों के इस उत्सव में लोग एक-दूसरे के घर जाते हैं, सामूहिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हैं और सामूहिक भोज का आनंद उठाते हैं। यही कारण है कि ओणम को सामाजिक समरसता और पारिवारिक एकता का भी महापर्व कहा जाता है।

सबके साथ ओणसदा का आनंद: ओणम का जिक्र ओणसदा के बिना अधूरा है। केले के पते पर परोसा जाने वाला यह पारंपरिक भोज केवल भोजन नहीं है, यह केरल की पाक संस्कृति का भी उत्सव है। इसमें अनेक प्रकार की सब्जियां, सांभर, अलियल, ओणम, थोरण, अचार, पापड़ और अंत में पायसम परोसा जाता है। इस भोजन की विशेषता यह होती है कि इसमें स्वाद के साथ संतुलित पोषण और सामूहिक भोजन की भावना भी शामिल होती है। परिवार व मित्र एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, जिससे आपसी संबंध और मजबूत होते हैं।

कृषि-प्रकृति से संबंध का प्रतीक: ओणम चूँकि वर्षा ऋतु के बाद अच्छी फसल आने की

खुशी का पर्व है, इसलिए इसका गहरा संबंध कृषि और प्रकृति से भी है। इस पर्व में की जाने वाली फूलों की सजावट, हरियाली, नई फसल और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान इस पर्व की प्रमुख विशेषता है। आज जब पर्यावरण संरक्षण पूरी दुनिया की चिंता बन चुका है, तब ओणम हमें प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। *

एक सवाल हम सभी को अकसर परेशान करता है कि अगर हम आगे बढ़ना चाहते हैं, प्रगति के साथ सकारात्मक बदलाव करना चाहते हैं तो फिर अपनी जिंदगी में मनचाहा बदलाव क्यों नहीं ला पाते हैं? इसका जवाब हमें ठहरकर अपने भीतर ही खोजना होगा।



आप अपनी जिंदगी में क्यों नहीं बढ़ पा रहे आगे

सेल्फ मोटिवेशन
जोगिंदर रोहिल्ला

हम में बहुत से लोग गोल डिसाइड करते हैं। प्लान बनाते हैं। मोटिवेशन की किताबें पढ़ते हैं। अफमेशन करते हैं और अपने भविष्य को विजुअलाइज भी करते हैं। फिर भी जाने क्यों हम वो अचीव नहीं कर पाते हैं। तब अकसर हम दूसरे लोगों को, भाग्य को और परिस्थितियों को दोष देना शुरू करते हैं। सवाल है आखिर हमें आगे बढ़ने से रोकता क्या है?

सोच को रखें पॉजिटिव: डॉ. जो डिस्पेंजा की किताब 'बीकमिंग सुपरनेचुरल' इस बारे में जिंदगी को थोड़ा अलग नजरिए से देखने के लिए प्रेरित करती है। इसमें व्यक्त किया गया एक विचार खासतौर पर ध्यान खींचता है। इसके अनुसार, हमारे विचार और हमारी भावनाएं (इमोशन) हमारे शरीर से गहराई से जुड़ी हुई होती हैं। विचार, भावना को प्रभावित करता है। भावना फिर विचार को प्रभावित करती है। और यह चक्र चलता रहता है। बार-बार ऐसा होने पर यह हमारे लिए जाना-पहचाना बन जाता है। हमारा दिमाग उस पैटर्न को पहचानने लगता है और हम बिना सोचे उसी तरह प्रतिक्रिया देने लगते हैं। वही डर, वही चिंता, वही प्रस्ट्रेशन और वही आत्म-संदेह। वास्तव में हम अपनी जिंदगी को सचेत होकर नहीं जी रहे होते हैं। हम सिर्फ वही दोहरा रहे होते हैं, जो हमारे लिए जाना-पहचाना बन चुका है। इसी विचार को दूसरी कुछ किताबें भी अलग-अलग तरीके से सामने रखती हैं। शक्ति गॉवेन की 'क्रिएटिव विजुअलाइजेशन' में बताया गया है कि जब हम अपने लक्ष्य और उस जीवन की एक स्पष्ट तस्वीर अपने मन में बनाते हैं, तो वह हमारी सोच और हमारे कार्र करने के तरीके को प्रभावित कर सकती है। 'द सीक्रेट' किताब ने भी जीवन में सफल होने के लिए विचारों, विश्वास और उम्मीदों के प्रभाव को लोकप्रिय बनाया। वहीं नेपोलियन हिल की 'थिंक एंड

ग्रे रिच' किताब, इच्छा, कल्पना और स्पष्ट उद्देश्य की ताकत पर जोर देती है। सबका सार यही है कि हम जिस दिशा में बार-बार अपने विचार और एनर्जी लगाते हैं, वह हमारी जिंदगी को प्रभावित करने लगती है।

अपना कॉन्सेप्ट रखें क्लीयर: एक जरूरी बात यह भी है कि सिर्फ सकारात्मक सोच काफी नहीं है। आप सुबह कह सकते हैं, 'मेरी जिंदगी बदल रही है।' लेकिन अगर अगले दस घंटे आप चिंता करते रहें, शिकायत करते रहें, खुद पर संदेह करते रहें और हर चीज के गलत होने की कल्पना करते रहें, तो उस सोच का कोई फायदा नहीं होगा। सवाल यह है कि आप वास्तव में खुद के किस रूप की प्रैक्टिस कर रहे हैं? उस व्यक्ति की, जो अब तक दुख, डर को दोहराता आ रहा है या उस इंसान की, जो आप बनना चाहते हैं?

बदलाव के प्रति रहें दृढ़: ट्रांसफॉर्मेशन कुछ हद तक एक तितली की लाइफ साइकिल जैसा होता है। एक कैटरपिलर को तितली बनने के लिए अपने पुराने रूप को छोड़ना पड़ता है। वह हमेशा कैटरपिलर बने रहकर तितली नहीं बन सकता। शायद इंसानों के साथ भी कुछ ऐसा ही है। हमारी बाहरी जिंदगी



बदलने से पहले कई बार हमारे भीतर कुछ बदलना जरूरी होता है। इसलिए जब भी लगे कि मैं किसी नकारात्मक विचार के चक्र में जा रहा हूँ तो रुककर खुद से एक सवाल पूछिए, 'क्या यह विचार मुझे उस इंसान के करीब ले जा रहा है, जो मैं आगे बनना चाहता हूँ?' **एनर्जी को दें सही दिशा:** एक पुरानी बौद्ध शिक्षा हमें याद दिलाती है, 'हम जैसा सोचते हैं, धीरे-धीरे वैसे ही बनते जाते हैं।' आपका बदलाव उस समय शुरू होगा, जब आप उन विचारों, भावनाओं और आदतों को पहचानना शुरू करेंगे, जो आपको पीछे खींच रहे हैं और सचेत होकर उस इंसान की प्रैक्टिस करना शुरू करेंगे, जो आप बनना चाहते हैं। अगर आप अपनी जिंदगी बदलना चाहते हैं, तो शुरुआत नए विचार और नई भावना से करनी होगी। आपका बदलाव बाहर नहीं आपके भीतर, आपके विचार में ही छिपा हुआ है। *

माई-बहन के स्नेह के प्रतीक पर्व रक्षाबंधन को लेकर कई पौराणिक-ऐतिहासिक कथाएं प्रचलित हैं। लेकिन हाल के वर्षों में इस रिश्ते को गहन अर्थ देने वाली, कई ऐसी मार्मिक घटनाएं सामने आईं, जो अपने-आप में मिसाल हैं।

दिल को छूने वाले राखी के अनोखे किस्से



शिवम मिस्त्री को राखी बांधती अनामता अहमद



साठ साल बाद अपने भाइयों से मिली बलेश देवी

कुछ अलग
शिखर चंद जैन

रक्षाबंधन सिर्फ एक राखी या रेशमी धागा बांधने की रस्म भर नहीं, बल्कि मन से जुड़ा बंधन होता है। यह सिर्फ सगे भाई-बहन के बीच नहीं, किसी भी उस शख्स या चीज से स्नेह को दर्शाता है, जिससे भाई की अनुभूति मिलती है। ऐसी ही कुछ घटनाओं के बारे में जानिए।

अंगदान से मिला नया भाई: साल 2025 में अंगदान की एक बड़ी ही भावुक सच्ची घटना सामने आई। 9 साल की एक बच्ची रिया को डॉक्टरों ने ब्रेन-डेड घोषित कर दिया था। रिया के माता-पिता ने एक बेहद साहसिक फैसला लेते हुए उसके अंग दान कर दिए। रिया का हाथ ऑर्गन ट्रांसप्लान्ट के जरिए एक लड़की अनामता अहमद को लगाया गया। 8 अगस्त 2025 को रक्षाबंधन के त्योहार पर, अनामता करीब 200 किलोमीटर का सफर तय करके रिया के घर पहुंची। वहां उसने रिया के सगे भाई शिवम मिस्त्री की कलाई पर उसी हाथ से राखी बांधी, जो कभी उसकी बहन का हुआ करता था। हुआ यह कि मुंबई के गोरगांव की रहने वाली 16 वर्षीय अनामता अहमद ने साल 2022 में बिजली के करंट की चपेट



सैनिकों के लिए राखियां बनाती स्कूली छात्राएं

में आने से अपना दाहिना हाथ खो दिया था। सितंबर 2024 में गुजरात के वलसाड की 9 वर्षीय मासूम बच्ची रिया मिस्त्री को डॉक्टरों ने ब्रेन-डेड घोषित कर दिया था। वलसाड की 'डोनेट लाइफ' एनजीओ की काउंसिलिंग के बाद रिया के माता-पिता ने उसके अंग दान कर दिए। ग्रीन कोरिडोर के जरिए रिया का दाहिना हाथ मुंबई लाया गया और ग्लोबल हॉस्पिटल पर अनामता को ट्रांसप्लान्ट किया गया।

मोडिया की मदद से पुरानी कड़ियों को जोड़ा गया और दोनों परिवारों की पहचान सुनिश्चित की गई। 9 अगस्त 2025 को यह मामला खबरों में आया। **सैनिकों के लिए लाखों राखियां:** देश की सहादों पर चौबीसों घंटे तैनात रहने वाले भारतीय सेना के जवानों को घर की कमी महसूस न हो, इसके लिए दिल्ली के कई स्कूलों के छात्रों ने मिलकर कुछ वर्ष पहले एक अनोखी मुहिम चलाई के प्रयासों और सोशल मीडिया की मदद से पुरानी कड़ियों को जोड़ा गया और दोनों परिवारों की पहचान सुनिश्चित की गई। 9 अगस्त 2025 को यह मामला खबरों में आया। **सैनिकों के लिए लाखों राखियां:** देश की सहादों पर चौबीसों घंटे तैनात रहने वाले भारतीय सेना के जवानों को घर की कमी महसूस न हो, इसके लिए दिल्ली के कई स्कूलों के छात्रों ने मिलकर कुछ वर्ष पहले एक अनोखी मुहिम चलाई

विशेष : रक्षाबंधन
28 अगस्त

थी। बच्चों ने अपने हाथों से तरह-तरह की सुंदर राखियां और उनके साथ सैनिकों के नाम शुभकामना संदेश लिखे। देखते ही देखते यह संख्या 72000 तक पहुंच गई। इसके अलावा तमिलनाडु का करूर जिला इस अभियान का मुख्य केंद्र बना। तमिलनाडु के करूर स्थित भरनी पार्क शिक्षण संस्थान के करीब 3000 छात्र-छात्राओं ने मिलकर 75000 से अधिक हस्तनिर्मित राखियां तैयार की थीं। इन राखियों की विशेषता यह थी कि इनमें से कई पर प्राचीन तमिल ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' के श्लोक छपे थे। इस तरह जब करीब 1.5 लाख राखियां एकत्रित हो गईं तो इसकी जानकारी तत्कालीन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को दी गई। उन्होंने 6 अगस्त 2022 को एक विशेष चार्टर्ड विमान की व्यवस्था करवाई। रक्षा मंत्रालय ने इन राखियों को तीनों सेना प्रमुखों (थलसेना, नौसेना, वायुसेना) के जरिए सियाचिन ग्लेशियर,

थी। बच्चों ने अपने हाथों से तरह-तरह की सुंदर राखियां और उनके साथ सैनिकों के नाम शुभकामना संदेश लिखे। देखते ही देखते यह संख्या 72000 तक पहुंच गई। इसके अलावा तमिलनाडु का करूर जिला इस अभियान का मुख्य केंद्र बना। तमिलनाडु के करूर स्थित भरनी पार्क शिक्षण संस्थान के करीब 3000 छात्र-छात्राओं ने मिलकर 75000 से अधिक हस्तनिर्मित राखियां तैयार की थीं। इन राखियों की विशेषता यह थी कि इनमें से कई पर प्राचीन तमिल ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' के श्लोक छपे थे। इस तरह जब करीब 1.5 लाख राखियां एकत्रित हो गईं तो इसकी जानकारी तत्कालीन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को दी गई। उन्होंने 6 अगस्त 2022 को एक विशेष चार्टर्ड विमान की व्यवस्था करवाई। रक्षा मंत्रालय ने इन राखियों को तीनों सेना प्रमुखों (थलसेना, नौसेना, वायुसेना) के जरिए सियाचिन ग्लेशियर,



वृक्ष रक्षाबंधन मनाती महिलाएं

लद्दाख, जैसलमेर और सिक्किम जैसे अत्यंत दुर्गम सीमावर्ती इलाकों में तैनात जवानों तक एयरलिफ्ट के माध्यम से पहुंचाने की जिम्मेवारी ली और उसे वहां तक पहुंचाया भी गया।

पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्ष-रक्षाबंधन: ग्लोबल वार्मिंग के गंभीर संकट और तेजी से कटते जंगलों के बीच पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए देश के कई राज्यों (विशेषकर बिहार, झारखंड और उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों) में 'वृक्ष रक्षाबंधन' की शुरुआत हुई। बिहार में 13 अगस्त 2012 से तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इसकी शुरुआत की थी। तब से यहां रक्षाबंधन के दिन लोग जंगलों और अपने आस-पास के पार्कों में जाते हैं और पेड़ों को बड़े-बड़े रक्षासूत्र (राखियां) बांधते हैं। लोग इन पेड़ों को अपना भाई मानकर इनकी रक्षा करने और इन्हें कभी न काटने का संकल्प लेते हैं। ग्रामीण महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग जंगलों में जाकर देवदार, पीपल, बरगद जैसे बड़े पेड़ों पर हल्दी-मौली और सूती धागों से बनी विशाल राखियां बांधते हैं। उन्हें अपना 'वन-भाई' मानकर उनके संरक्षण की शपथ ली जाती है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई को रोकने के लिए पर्यावरणविदों और वन विभाग के सहयोग से यह मुहिम अब एक बड़े जन-आंदोलन का रूप ले चुकी है। *

सिने डेंड
अशोक जोशी

भा रतीय परिवार व्यवस्था में भाई-बहन का रिश्ता अनोखा और प्यारा होता है। बचपन में जहां इसमें नोक-झोंक होती है, वहीं उम्र बढ़ने के साथ यह रिश्ता भावनात्मक सहारे में बदल जाता है। हिंदी फिल्मों ने इस रिश्ते के अलग-अलग रंगों को पर्दे पर प्रस्तुत किया है। कहीं भाई, बहन की रक्षा के लिए सब कुछ छोड़ देता है, कहीं बहन-भाई के लिए वर्षों तक संघर्ष करती है और कहीं दोनों एक-दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त बनकर सामने आते हैं।

बीते दौर की फिल्मों में भाई-बहन का रिश्ता: पुरानी हिंदी फिल्मों में भाई-बहन का रिश्ता प्रायः परिवार की भावनात्मक धुरी के रूप में दिखाई देता था। 'छोटी बहन' (1959) और 'राखी' (1962) जैसी फिल्मों ने भाई-बहन के स्नेह, जिम्मेदारी और त्याग को प्रमुखता दी। इन फिल्मों में परिवार केवल कहानी की पृष्ठभूमि नहीं था, परिवार ही कहानी का मूल भाग था। 'बड़ी बहन' (1949), 'मंझली दीदी' (1967) जैसी फिल्मों में भी यह भाव देखने को मिलता है।

सतर और अस्सी के दशक में सामाजिक संघर्ष तथा व्यावसायिक सिनेमा के प्रभाव के साथ भाई की भूमिका अकसर 'रक्षक' के रूप में उभरकर सामने आई। बहन की सुरक्षा और सम्मान के लिए संघर्ष करना भाई के चरित्र की पहचान बन गया। लेकिन इसी दौर में और बाद के दशकों में आई कुछ फिल्मों ने भाई-बहन के रिश्ते के दूसरे पक्षों को भी सामने रखा।

भाई-बहन की कुछ अलग कहानी 'हरे रामा हरे कृष्णा': साल 1971 में देव आनंद और जीतन अमान अभिनीत फिल्म 'हरे रामा हरे कृष्णा' बदलते सामाजिक वातावरण, पश्चिमी प्रभाव, नशे और हिंसा संस्कृति के बीच एक भाई द्वारा अपनी बहन को वापस पाने के प्रयास की मार्मिक कहानी थी। भाई-बहन के बीच बचपन का स्नेह, परिस्थितियों के कारण बिछोह में बदल जाता है और फिर भाई अपनी बहन को उस दुनिया से निकालने के लिए संघर्ष करता है, जिसमें वह फंस चुकी है।

इस फिल्म की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें भाई अपनी बहन का केवल 'रक्षक' नहीं है, वह उसके अतीत, उसकी पीड़ा और उसकी पहचान को समझने की कोशिश करता है। फिल्म का लोकप्रिय गीत 'फूलों का तारों का, सबका कहना है, एक हजारों में मेरी बहना है' तो हिंदी सिनेमा में भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक बन चुका है। आज भी यह गीत राखी के अवसर पर उसी आत्मीयता से सुना जाता है।

संयुक्त परिवार में भाई-बहन का प्यार 'हम

भाई-बहन के शाश्वत रिश्ते को केंद्र में रखकर या इसके इर्द-गिर्द बुनी गई कहानियों और वास्तविकताओं पर हर दौर में हिंदी फिल्में बनती रही हैं। भाई-बहन के स्नेह भरे रिश्ते के विविध आयामों को दर्शाती कुछ फिल्मों पर एक नजर।

हर दौर की फिल्मों में रची गई भाई-बहन के रिश्ते की दास्तान



साथ-साथ हैं': नब्बे के दशक में सिनेमा ने संयुक्त परिवार और भाई-बहन के रिश्ते को अधिक घरेलू और सहज रूप में प्रस्तुत किया। 'हम साथ-साथ हैं' (1999) में भाई-बहनों के बीच प्रेम, विश्वास और त्याग कहानी का महत्वपूर्ण भाग है। यहां भाई-बहन केवल परिवार के सदस्य नहीं, बल्कि एक-दूसरे के भावनात्मक ताकत के रूप में दिखाए गए हैं। फिल्म में सभी भाई अपनी बहन का पूरा खयाल रखते हैं, उसे अपेक्षित मान और

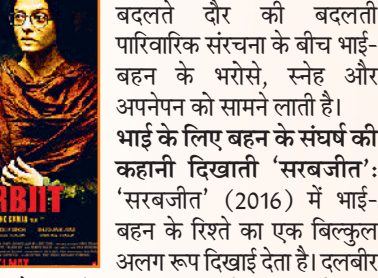


को बहुत प्रभावी तरीके से सामने लाता है।

आधुनिक शहरी संदर्भ में भाई-बहन का रिश्ता 'दिल धड़कने दो': साल 2015 में रिलीज फिल्म 'दिल धड़कने दो' में भी भाई-बहन का रिश्ता आधुनिक उच्चवर्गीय शहरी परिवार के संदर्भ में दिखाई देता है। दोनों अपने परिवार की अपेक्षाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच संघर्ष करते हुए एक-दूसरे के भरोसेमंद भावनात्मक ताकत के रूप में दिखाए गए हैं। फिल्म में सभी भाई अपनी बहन का पूरा खयाल रखते हैं, उसे अपेक्षित मान और

आदर देते हैं। **सुरिखल वक्त में भाई के साथ खड़ी किसी की कहानी 'माय ब्रदर... निरिखल':** नई सदी में भाई-बहन के रिश्ते की परिभाषा और विस्तृत हुई। अब बहन केवल भाई की सुरक्षा की जिम्मेदारी वाला पात्र नहीं रही। वह उसकी मित्र, विश्वासपात्र और संचर्ष की साथी भी बनी। 'माय ब्रदर... निरिखल' (2005) इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। फिल्म में बहन अपने भाई के कठिन दौर में उसके साथ जिस मजबूती से खड़ी रहती है, वह भाई-बहन के रिश्ते में समानता और भावनात्मक साझेदारी

को बहुत प्रभावी तरीके से सामने लाता है। **आधुनिक शहरी संदर्भ में भाई-बहन का रिश्ता 'दिल धड़कने दो':** साल 2015 में रिलीज फिल्म 'दिल धड़कने दो' में भी भाई-बहन का रिश्ता आधुनिक उच्चवर्गीय शहरी परिवार के संदर्भ में दिखाई देता है। दोनों अपने परिवार की अपेक्षाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच संघर्ष करते हुए एक-दूसरे के भरोसेमंद भावनात्मक ताकत के रूप में दिखाए गए हैं। फिल्म में सभी भाई अपनी बहन का पूरा खयाल रखते हैं, उसे अपेक्षित मान और



बदलते दौर की बदलती पारिवारिक संरचना के बीच भाई-बहन के भरोसे, स्नेह और आपनेपन को सामने लाती है। **भाई के लिए बहन के संघर्ष की कहानी दिखाती 'सरबजीत':** 'सरबजीत' (2016) में भाई-बहन के रिश्ते का एक बिल्कुल अलग रूप दिखाई देता है। दलवीर कौर अपने भाई सरबजीत के लिए वर्षों तक संघर्ष करती है। यहां बहन किसी कमजोर या आश्रित पात्र के रूप में नहीं, बल्कि संघर्ष की अगली पंक्ति में खड़ी एक दृढ़ महिला के रूप में सामने आती है। यह फिल्म इस बात को रेखांकित करती है कि भाई-बहन का रिश्ता आवश्यकता पड़ने पर जीवन भर के संघर्ष का संबल बन सकता है। *

पर्दे से बाहर भी बने भाई-बहन के रिश्ते

फिल्मी पर्दे पर कलाकर एक-दूसरे के भाई-बहन बने नजर आते हैं, जबकि अकसर वास्तविक जीवन में उनके बीच ऐसा कोई रिश्ता नहीं होता। इसके उलट फिल्मी दुनिया से जुड़ी कुछ हस्तियों ने पर्दे के बाहर भाई-बहन का रिश्ता कायम किया और इस आत्मीय रिश्ते को ताऊ निमाया भी। महान गायिका लता मंगेशकर के जीवन में ऐसे आत्मीय रिश्तों की विशेष जगह थी। उन्होंने कई कलाकारों के साथ उनकी पारिवारिक आत्मीयता थी। दिलीप कुमार के साथ उनका संबंध विशेष रूप से भावपूर्ण था। दिलीप कुमार उन्हें बहन मानते थे और लता जी भी उन्हें अपने भाई का स्थान देती थीं। राखी के अवसर पर दोनों का यह संबंध सार्वजनिक रूप से भी चर्चित रहा। ऐसे ही संगीतकार मदन मोहन और गायक मुकेश को भी लता जी अपना भाई मानती थीं। इन दोनों को लता जी 'भैया कडकर बुलारी' थीं और उन्हें राखी बांधती थीं।



दोनों को लता जी 'भैया कडकर बुलारी' थीं और उन्हें राखी बांधती थीं।